छत पर फँस गया बिल्ला

और

तीन कहानियाँ

विताउते जिलिन्स्काइते

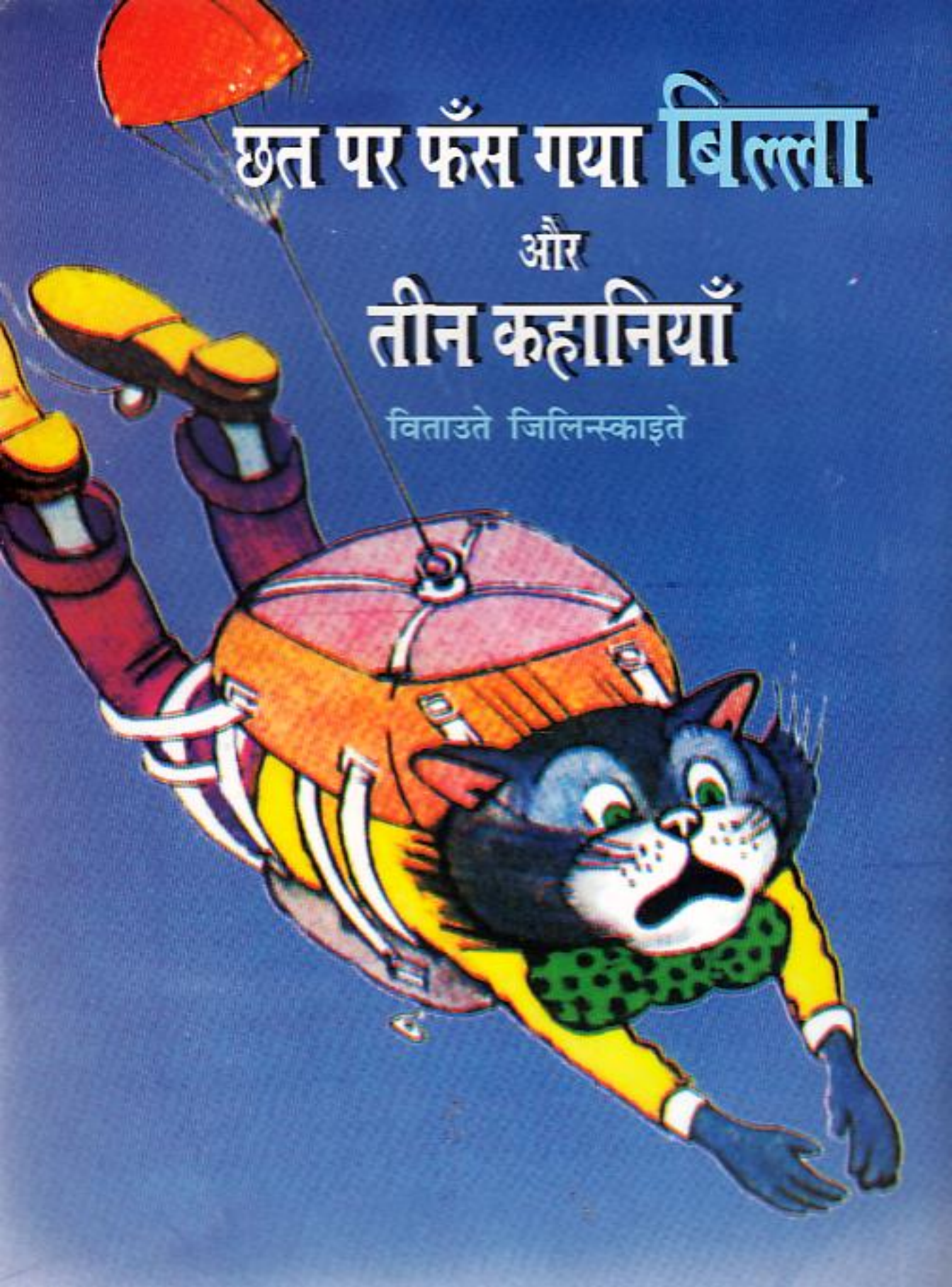

छत पर फँस गया बिल्ला और तीन कहानियाँ

विताउते जिलिन्स्काइते

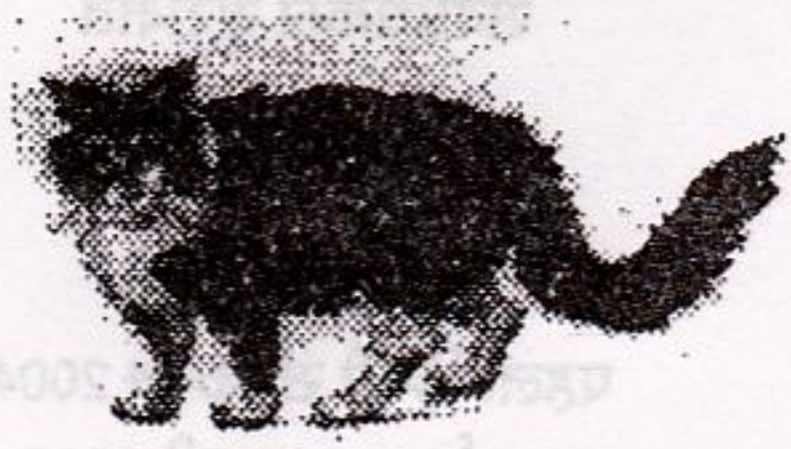

अनुवादक : संगमलाल मालवीय

आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 35 रुपये
पहला हिन्दी संस्करण 2004
पुनर्मुद्रण : जनवरी 2008
पुनर्मुद्रण : अगस्त 2012

प्रकाशक
अनुराग ट्रस्ट
डी - 68, निरालानगर
लखनऊ - 226020

लेजर टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन
मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

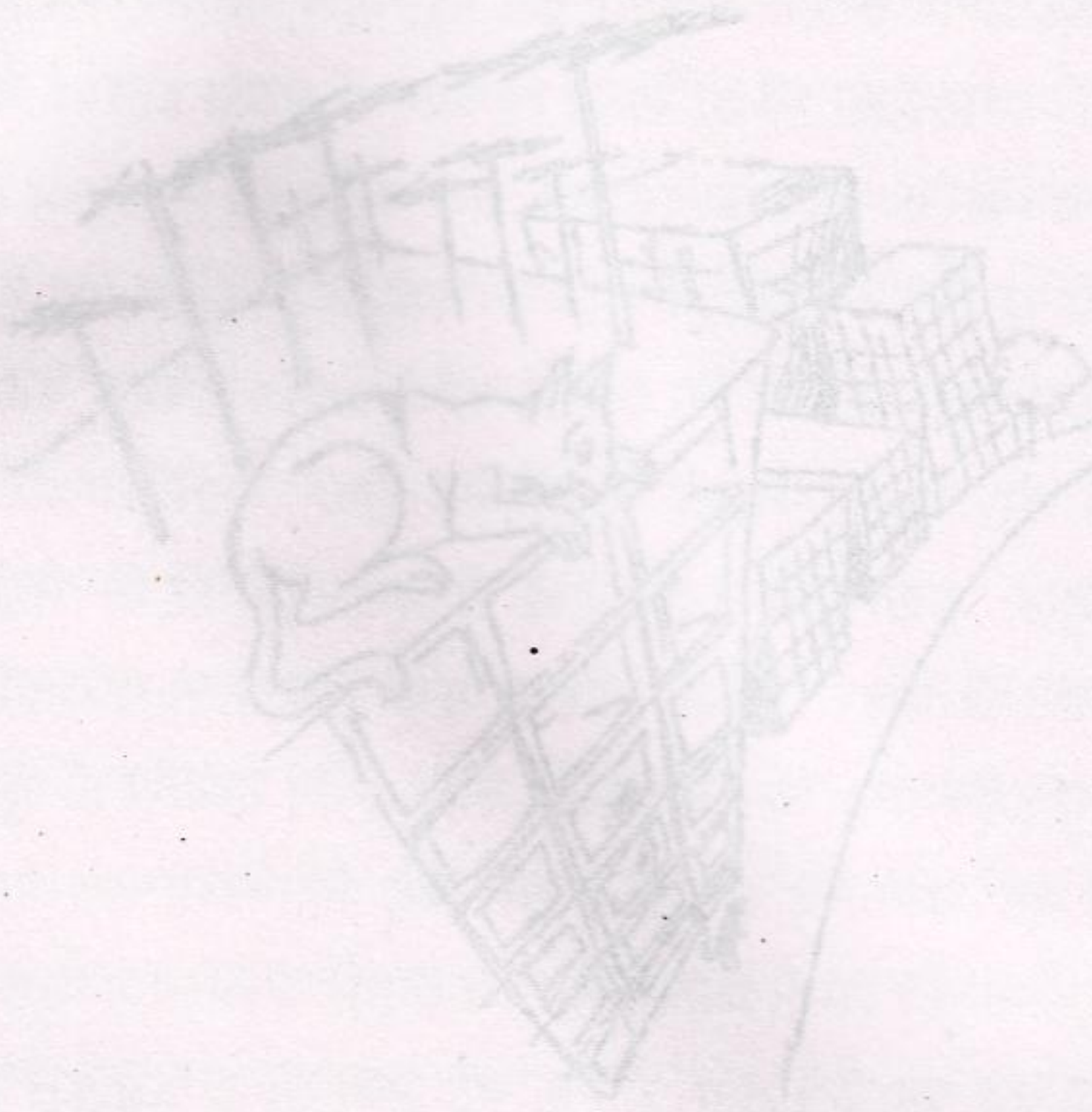

अनुक्रम

छत पर फँस गया बिल्ला	5
रोबोट और तितली	16
जब नटखट हिमिका पिघली नहीं	27
बछेड़े का बदला	38

छत पर फँस गया बिल्ला

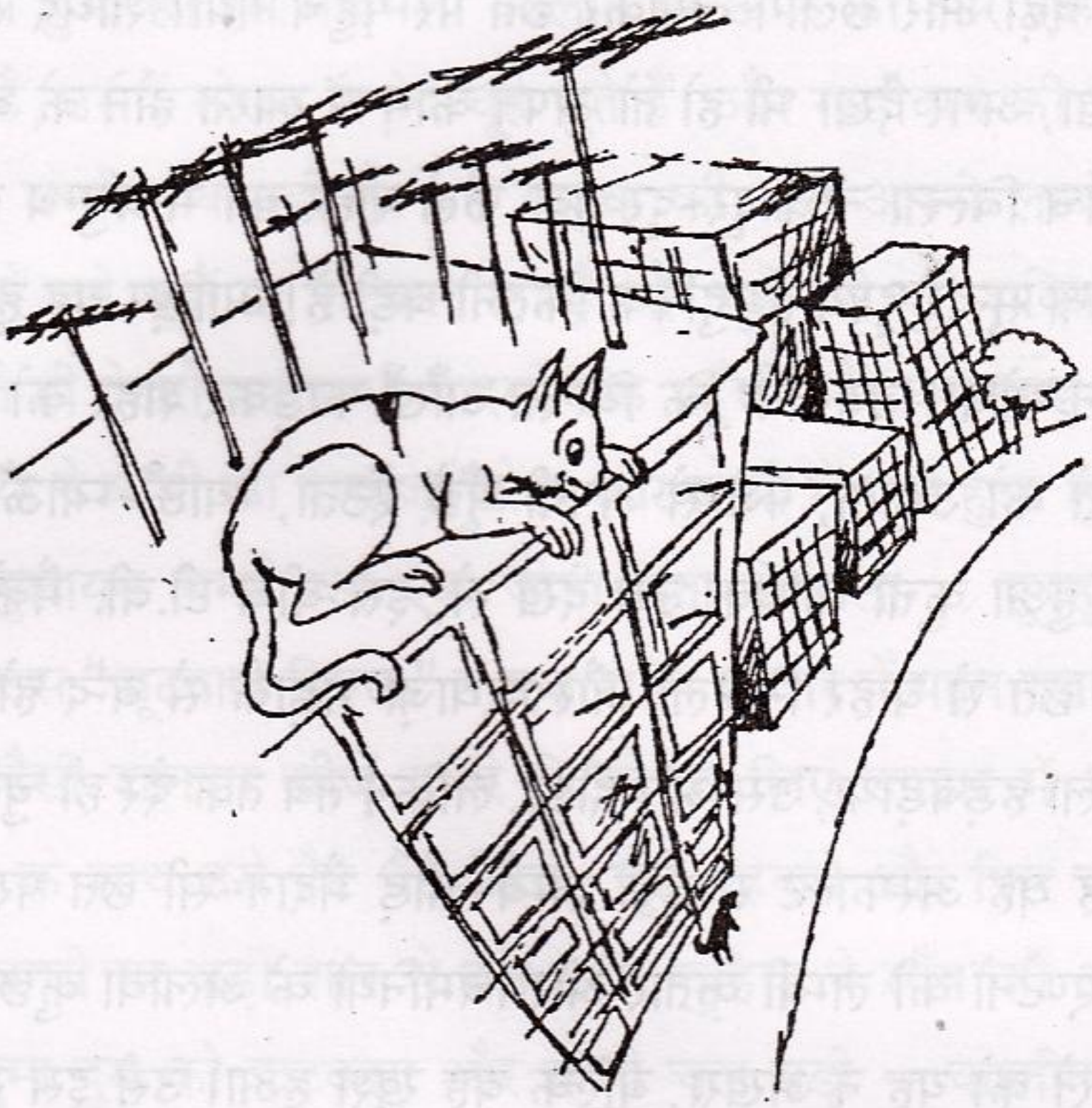

बारहमंज़िली इमारत की सपाट छत पर टेलीविज़न के एण्टेनों के बीच एक घुमक्कड़ बिल्ला बेचैनी से छटपटा रहा था। उसे किसी तरह विश्वास न हो पा रहा था कि वह फँस गया है। लोग उसे व्यर्थ ही घुमक्कड़ बिल्ला नहीं कहते थे। वह बेहद चालाक और ख़ूब फुर्तीला था। सड़क पर दौड़ती मोटर गाड़ियों के बीच से निकल भागता था। कभी झपटकर पेड़ों पर चढ़ जाता, तो कभी एक बरामदे से दूसरे बरामदे में पहुँच जाता। लेकिन यहाँ इस छत पर ...

यह घटना यूँ घटी। लगभग एक घण्टे पहले घुमक्कड़ बिल्ला बारहवीं मंज़िल की सीढ़ियों पर खर्राटे ले रहा था कि इसी बीच एक टी.वी. मैकेनिक लिफ़्ट से ऊपर पहुँचा। वह लोहे की एक छोटी सीढ़ी के सहारे छत से सटे लौह द्वार तक आया और

ताला खोलकर छत पर पहुँच गया। घुमक्कड़ बिल्ले ने कभी इतनी ऊँची छत पर घूमने का सुख न उठाया था। आख़िर उसे जिज्ञासा तो थी ही? देखते ही देखते वह बिल्ला सीढ़ियों पर चढ़ा और छलाँग लगाकर छत पर पहुँच गया। शायद टी.वी. मैकेनिक ने उसे नहीं देखा, अगर देखा भी हो तो अपने काम में व्यस्त होने के कारण उसे भूल ही गया। इस बीच बिल्ला नीचे दूर-दूर तक फैले शहर को मन्त्रमुग्ध होकर देखने लगा। "अहा, कितना सुन्दर दृश्य है! दुनिया कितनी बड़ी है! आख़िर यह हुई न बात!" बिल्ले ने मन ही मन सोचा। जब तक कि बिल्ला आँखें फाड़कर शहर को देखता रहा, गटरगूँ करते कबूतरों को उड़ाता, पंजे से अपनी मूँछें ऐंठता, म्याऊँ-म्याऊँ करता रहा, ताकि नीचे दौड़ता हुआ कुत्ता बाबिक उसे देख ले, इस बीच टी.वी. मैकेनिक अपना काम ख़त्म करके छत से बाहर निकला और दरवाज़ा भड़ाक से बन्द हो गया। उसके बन्द होते ही बिल्ला हड़बड़ाया, उस ओर दौड़ा, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।

इस तरह वह अस्फाल्ट से ढँके लम्बे-चौड़े मैदान-सी छत पर अकेला रह गया, जहाँ टी.वी एण्टेनों की लम्बी क़तार और चिमनियों के अलावा कुछ न था। सच है कि शुरू में बिल्ले को यह न अखरा, बल्कि वह खुश हुआ। उसे इस साहसिक अभियान पर गर्व था। यहाँ से वापस लौटकर वह अपने दोस्त बाबिक समेत सभी बिल्ले-बिल्लियों को इस अभियान के क़िस्से सुनायेगा! उसने खुद को धीरज बँधाया : "फ़िक्र न करो, यार! कहीं इससे बुरा हाल होता तो! अपने बूढ़े दादा जी फ़िज़ूल तो नहीं कहते थे : तिकड़मी बिल्ला रास्ता ढूँढ़ लेता है!"

सूरज की किरणों में पर्याप्त गरमाहट थी। अस्फाल्ट से पिघले तारकोल की भीनी-भीनी गन्ध घुमक्कड़ बिल्ले के नथुने में समा गयी और वह मज़े से धूप में पसर गया। जल्द ही नींद आ गयी। नींद में बिल्ले ने एक मोहक सपना देखा। ऐसा सपना उसने कभी न देखा था। शायद उसके बूढ़े दादा ने भी नहीं! उस तरह का सपना देखने के लिए तो सौवीं मंज़िल पर ही चढ़ना होता है, बारहवीं मंज़िल की बात क्या।

सपने में घुमक्कड़ बिल्ले को क्या दिखा? उसने देखा कि वह बादलों पर उड़ रहा है। वहाँ ख़ूब मोटी मख़मली कालीन बिछी है और वह भी ऐसी लम्बी कि उसका दूसरा छोर ज़मीन तक फैला हुआ है। इस मख़मली कालीन पर ऊपर की ओर एक ख़ूबसूरत बग्घी चली आ रही है, उसमें सोलह सफ़ेद चूहे जुते हैं। और गाड़ीवान की जगह एक झूमर चुहिया मज़े से बग्घी हाँक रही है। वह चाबुक की तरह अपनी लम्बी दुम को घुमा-घुमाकर बग्घी में जुते चूहों पर फटकार रही है और चूहे उसे पूरी शक्ति से उड़ाये लिये जा रहे हैं। देखते ही देखते वह बग्घी बादलों तक पहुँची और घुमक्कड़ बिल्ले के पास ठहर गयी। चुहिया ने बग्घी का दरवाज़ा खोला और बग्घी में रखा हुआ शुतुरमुर्ग़ के पंखवाला हैट और मुलायम चमड़े का एक जोड़ा जूता निकाला – हूबहू वैसा ही सुन्दर-सा, जैसा कि उस "बूटवाले बिल्ले" ने एक रंगीन तस्वीर में पहन रखा था। और ज़रा सोचिये कैसी-कैसी शानदार चीज़ें हमारे बिल्ले के लिए उपहार में आयी थीं! चुहिया ने बड़े अदब के साथ उसे हैट भेंट किया, जूते पहनाये और फिर वह सुनहरे राजचिह्न वाली उस बग्घी पर बड़ी शान से बैठ गया! चुहिया ने साँय की आवाज़ के साथ अपनी चाबुकनुमा दुम को फटकारा और बग्घी चल पड़ी – कालीन-पथ पर, धरती की ओर!

बग्घी शान से चली जा रही थी। शहर की सभी बिल्लियों, कुत्तों, कौवों और गौरैयों ने उसे ईर्ष्या से देखा। गर्व से तना घुमक्कड़ बिल्ला खिड़की के बाहर झाँक-झाँककर मांस के टुकड़ों को मुट्ठी भर-भर बड़ी उदारता से लुटाने लगा। ख़ूब छीना-झपटी होने लगी! यह सब ऐसा मज़ेदार था, इतना लुभावना था कि बिल्ला नींद में मुस्कुरा उठा। और... उसकी नींद टूट गयी। अलसाया हुआ घुमक्कड़ बिल्ला खुशी से पंजे उठाते हुए ज़रा और पसर गया। वह अपना थूथुन धोने ही जा रहा था। पर उसे अचानक ख़याल आया कि वह कहाँ आ फँसा है। दूर क्षितिज पर सूरज डूब रहा था, छत ठण्डी हो चली थी। बिल्ले का दिल बैठ गया। वह छत के दरवाज़े की ओर भागा – शायद वह खुल ही गया हो? लेकिन वह तो पूर्ववत बन्द था। पर हाय रे, उसे तो ख़ूब ज़ोर से भूख लगी है

और खाने की चीज़ें छत पर तो कोई रखता नहीं। वैसे वह किसी मोटे सुस्त कबूतर को दबोचने की कोशिश कर सकता था। लेकिन कबूतर इस नये ख़तरे से सतर्क थे, वे सब पड़ोस की छत पर बसेरा ले रहे थे। वहाँ उन्हें कोई ख़तरा न था। उनकी छत पर बिल्ला जो बैठा था। अब वे वहाँ बैठे हुए अभागे बिल्ले की हरकतें देख-समझ रहे थे।

मायूस बिल्ला छत के किनारे पहुँचा और उसने झाँककर नीचे देखा। बाप रे, इत्ता ऊँचा है! उसका सिर चकराने लगा। नीचे काले धब्बे की तरह, सुनसान मैदान दिखायी दे रहा था। लेकिन बिल्ले को अच्छी तरह मालूम था कि पास ही छत के नीचे खिड़कियाँ और बाल्कनियाँ थीं। तो क्या वह छलाँग लगाने की कोशिश करे? नहीं! इसका तो इरादा ही छोड़ दो। कूदकर रेलिंग को पकड़ पाना सम्भव न था। और चूकने का मतलब था गिरकर मर जाना।

"म्याऊँ-म्याऊँ-म्याऊँ!" बिल्ले ने गला फाड़कर चिल्लाना शुरू किया। उसे उम्मीद थी कि कोई उसकी मदद के लिए आगे आयेगा।

उसने दरवाज़ा खुलने की आहट सुनी, कोई बाल्कनी में आया।

"म्याऊँ-म्याऊँ-म्याऊँ!" बिल्ले ने चीख़ने-चिल्लाने में पूरी शक्ति लगा दी।

"चुप रह! सत्यानाश हो तेरा!" बाल्कनी से एक गुस्सैल आवाज़ सुनायी दी और बिल्ले की उम्मीद पर पानी फिर गया।

बेचारा बिल्ला बस रोने को ही था। वह छत के किनारे से दूर हट गया और टी.वी. एण्टेनों की क़तार को ज़रा ग़ौर से देखने लगा। सहसा उसे एक युक्ति सूझी : "अगर किसी एक एण्टेना को गिरा दिया जाये तो बात बन सकती है। यानी कि टी.वी. ख़राब हो जायेगा और एण्टेना की मरम्मत के लिए फिर से मैकेनिक आयेगा!" बिल्ला ख़ूब ज़ोर से दौड़ा और उसने एक भरपूर हमला एण्टेनावाली लोहे की छड़ पर किया। एण्टेना टस से मस न हुआ, बल्कि उससे टकराते ही वह दर्द से कराह उठा। तब उसने एक और तरकीब सोची! इस बार उसने धीरे-धीरे एण्टेना को गिराने की कोशिश की लेकिन

वह पहले की तरह हिला तक नहीं।

"लो, आ गयी शामत!" उसने मानते हुए एक गहरी साँस ली।

रात हो चली। चाँद निकल आया।

बिल्ले ने ठण्ड से ठिठुरते हुए किसी तरह रात बितायी। इस बार उसे स्वप्न से भी राहत न मिली। जब कभी वह आँखें मूँद लेता तो उसके सामने वे मांस के बड़े-बड़े टुकड़े नाचने लगते जिन्हें वह स्वप्न में बग्घी से लुटा रहा था।... इस तरह वह रात-भर करवटें बदलता रहा। और अन्त में सुबह हो गयी। बिल्ले की जान में जान आयी। चमकते सूरज की गरमी ने उसे नयी शक्ति दी। वह फिर से छत के किनारे पहुँचा। इस बार नीचे मैदान में उसका दोस्त – कुत्ता बाबिक दिखलायी दिया। वह दीवार के क़रीब रुका। फिर उसने ऊपर की ओर देखा, बिल्ला छत से नीचे झाँक रहा था।

"अहाहा!" बाबिक ने हैरानी से पूछा। "यार, तुम छत पर हो? नीचे आओ! क्या वहाँ बहुत सारे चूहे हैं?"

"भाई, मैं यहाँ टी.वी. एण्टेनों की रखवाली करता हूँ।" बिल्ले ने ज़रा वज़नदारी से कहा। "तनख़्वाह भी ठीक-ठाक है। रोज़ शाम को टर्की चिड़िया की एक टाँग खाने को

मिल जाती है!"

"क्या समूची टाँग? लेकिन तुम इतने दुबले क्यों हो?" कुत्ते ने हैरानी से पूछा।

"अरे, तुम्हारी आँखें कमज़ोर हो गयी हैं। चश्मा लगाओ, चश्मा।" बिल्ले ने रुखायी से कहा।

कुत्ते बाबिक ने कोई उत्तर न दिया, अन्दर से मुर्ग़ी की हड्डी बाहर उठा लाया। और सुबह का नाश्ता करने लगा।

ऊपर छत पर खड़े बिल्ले को भी मुर्ग़ी की महक़ लगी और हड्डी चबाने की कड़कड़ाहट सुनायी दी। बिल्ले के पेट में कहीं ज़्यादा ज़ोर-ज़ोर से चूहे कूदने लगे, आँख के सामने अँधेरा-सा छा गया।

"अभी मौक़ा है, नीचे उतर आओ। थोड़ा तुम्हें भी मिल जायेगा।" बाबिक ने दोस्त बिल्ले से कहा।

"यार, तुम भी!" बिल्ले ने ज़रा रोब से कहा। "मैंने वचन दे रखा है, यहाँ से एक क्षण के लिए न हटूँगा। समझ गये न!"

उसने बाबिक को सच-सच बता दिया होता कि वह विपत्ति में फँस गया है। लेकिन कुत्ता उसकी मदद भी क्या कर पाता, बल्कि शहर-भर के कुत्ते-बिल्लियों को घूम-घूमकर क़िस्से सुनाता कि घुमक्कड़ बिल्ला बारहमंज़िले मकान की छत पर फँस गया है। तब तो सभी उसका मज़ाक़ उड़ाते। इसलिए बिल्ला वहाँ से हटा और छत की दूसरी ओर पहुँच गया, ताकि यहाँ मुर्ग़ी की हड्डी की गन्ध उस तक न पहुँचे। लेकिन यहाँ छत से सटे बिजली के तार पर बैठी गौरैयाँ गपशप कर रही थीं। बिल्ले ने चिड़ियों से नज़र बचायी और वहाँ से हटकर चिमनी के पीछे छिप गया। लेकिन एक चिड़िया ने उसे देख लिया। वही हुआ, जिसका बिल्ले को भय था। चिड़िया ने ज़ोर-ज़ोर से चहकना शुरू किया :

"वाह! ख़ूब, बहुत ख़ूब! छत पर फँस गये बिल्ले मियाँ। हाय रे, बेचारा नीचे उतर ही नहीं पा रहा है।"

"फँस गये, फँस गये!" चिड़ियों ने चहकते हुए कहा। उनके फुदकने और झूम-झूमकर बतियाने से बिजली का तार हिलने लगा। उसी समय चिड़ियों के संगीत निदेशक ने अपने पंख लहराये और शौक़िया कोरस गायकों ने बिल्ले को चिढ़ाते हुए गाना शुरू किया :

"हँसी आ रही – हा, हा, हा!
हाय बेचारा, हा, हा, हा!
गाज गिरी जब अक्ल के ऊपर!
बिल्ला फँस गया छत के ऊपर!
बोलो बेचारा अब क्या करे?
ताला बन्द है भूखों मरे!
उतर नहीं सकता वह भाई!
बुद्धू राम की शामत आयी!"

बिल्ले को चिढ़ाने वाला गीत सुनते ही उसके वफ़ादार दोस्त बाबिक को बुरा लगा, वह चिड़ियों पर ज़ोर से गरजा :

"बकबक बन्द करो। मेरे दोस्त बिल्ले को पहरेदारी करने दो। वह कोई ऐरा-गैरा नहीं है। एण्टेना-रक्षक है, उसे तनख़्वाह मिलती है। फ़िज़ूल की बातें मत करो।"

लेकिन चिड़ियाँ भला क्यों चुप रहतीं? गायकों ने और ज़ोर-ज़ोर से गाना शुरू किया :

"हँसी आ रही – हा, हा, हा!
हाय बेचारा हा, हा, हा!
एण्टेरा-रक्षक बिल्ला प्यारा!
दिखता है वह सबसे न्यारा!
छत पर काँपे सारी रात!

नहीं समझ में आती बात!
एण्टेना सब उड़े जा रहे!
घर से बुद्धू यहाँ आ रहे!"

इस तरह घुमक्कड़ बिल्ले का दूसरा दिन भी बड़ी परेशानी से बीता। इतना ही होता तो शायद ग़नीमत थी। लेकिन शाम हुई तो आसमान पर काले बादल घिर आये, बिजली चमकी, बादल गरजे और मूसलाधार बारिश होने लगी। आख़िर बेचारा बिल्ला सिर कहाँ छिपाता। वह खुली छत पर एकदम लाचार-सा पड़ा रहा और पानी से तरबतर हो गया। बारिश ख़त्म हुई तो थरथर काँपता हुआ बिल्ला भीगे चीथड़ों का ढेर-सा बन गया। बेचारा मरा तो नहीं, पर सारे करम हो गये!

"बूढ़े दादा नाहक यह कहते थे – तिकड़मी बिल्ला रास्ता ढूँढ़ लेता है।" उसने मायूसी से सोचा। "मैं ज़रा देखता कि अगर वह आज मेरी जगह होते, तो कौन-सी राह ढूँढ़ निकालते! और वो सूट-बूटवाला बिल्ला! उसकी अक्ल भी जवाब दे जाती।"

सुबह आसमान साफ़ था! सूरज की तप्त किरणों ने भीगी छत को सुखा दिया। बिल्ले की भीगी खाल और रोयें सूख गये। लेकिन बिल्ला भूख से बेहाल था। कमज़ोरी के कारण बड़ी मुश्किल से पैर उठा पा रहा था। उसकी हालत रबड़ की उस गेंद की तरह थी, जिसकी हवा निकल गयी हो! दोपहर में बाबिक ने भौंकना शुरू किया। उसने भौंककर बिल्ले का हाल पूछा। यानी उसकी ड्यूटी का क्या हाल है और टर्की की टाँग स्वादिष्ट है न? लेकिन बिल्ले ने उस ओर देखा तक नहीं। कौन शक्ति बरबाद करे? वैसे ही भूख के मारे जान निकली जा रही है। ... वह लेटा हुआ एक बड़े-से कौवे को बेमन से देख रहा था। कौवा अपनी चोंच साफ़ करने छत पर आया था। वह खाया-पिया और सुस्त लग रहा था।

"काश, उसके पंख ही मिल जाते।" उदास मन से बिल्ले ने सोचा। और अचानक उसकी तीव्र बुद्धि काम कर गयी।

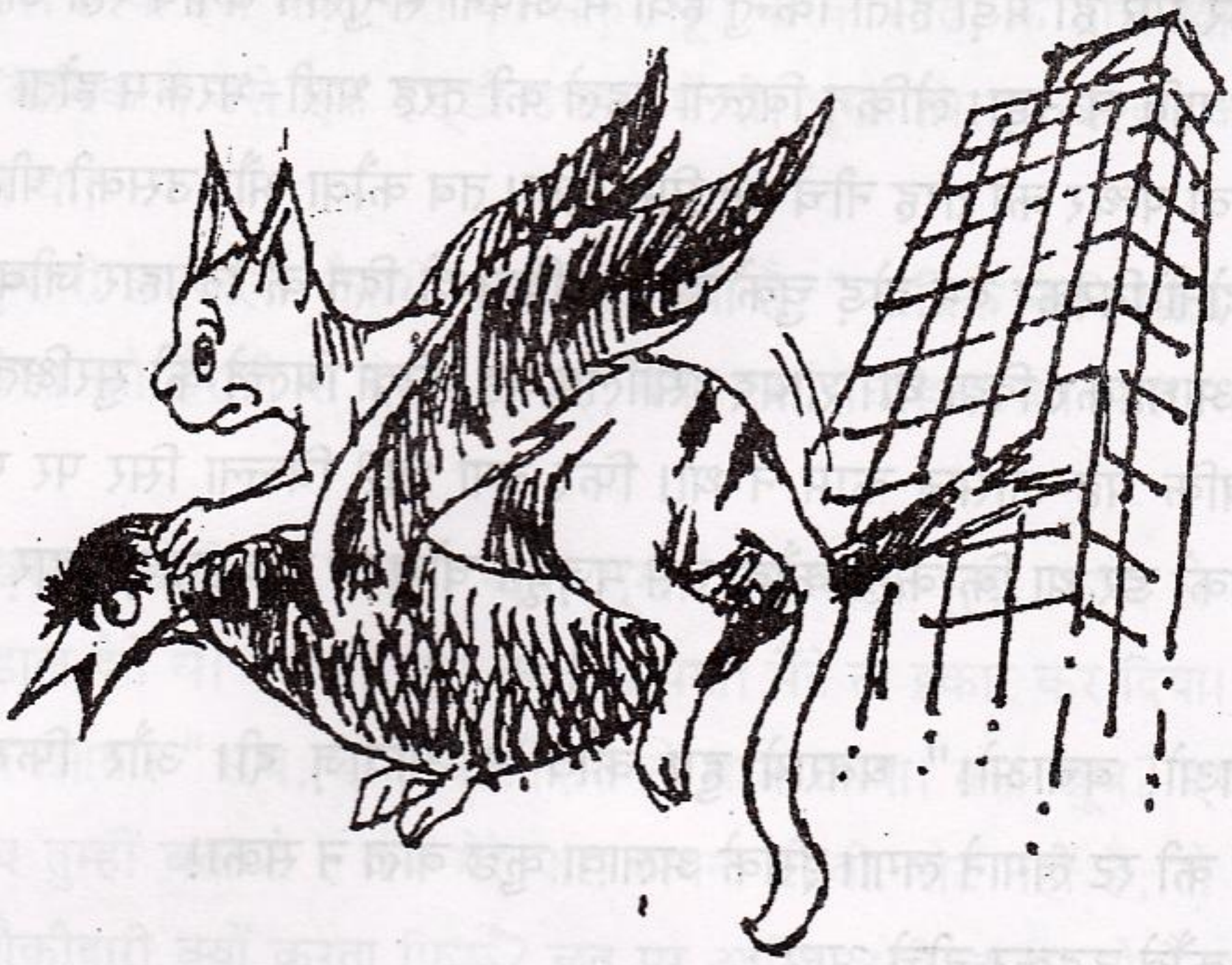

वह अपने पंजे के बल बैठ गया, जो कमज़ोरी से काँप रहे थे। वह बनकर बैठा रहा जैसे उसे कौवे में कोई रुचि नहीं है। लेकिन चुपके-चुपके उस ओर खिसकने लगा। आलसी कौवे ने एक आँख से बिल्ले की ओर देखा और निश्चिन्त होकर अपनी चोंच साफ़ करता रहा। आख़िर उससे डरना क्या? बिल्ला तो इतना मरियल है कि वह उसे एक चोंच में ही ठीक कर देगा।

बिल्ला काफ़ी क़रीब तक पहुँचकर छत के किनारे बैठ गया। उसने कौवे को न देखने का बहाना किया, लेकिन उसके सतर्क कान क्षण-प्रतिक्षण की आहट ले रहे थे : कौवे ने चोंच साफ़ की, अपने पंख फड़फड़ाये, पंजे पैने किये और बस उड़ने ही वाला था। उसने धीरे से काँव कहा, बेशक उसने एक कौवे की काँव का उत्तर दिया था। उसने अपनी गर्दन तानी, पंख फैलाये और।...

इधर जैसे ही कौवा उड़ने के लिए उछला बिल्ले ने अपनी शेष शक्ति जुटाकर एक ज़ोरदार छलाँग लगायी और उड़ते ही कौवे की पीठ पर सवार हो गया। हैरान कौवा

लड़खड़ाकर गिर ही पड़ा होता किन्तु हवा में अपना सन्तुलन बनाये रहा और नीचे की ओर मन्थर गति से उड़ा। लेकिन बिल्ला पहले की तरह भारी-भरकम होता तो निश्चित ही वह कौवा पत्थर की तरह नीचे आ गिरा होता। तब कौवा और उसकी पीठ पर सवार मुसाफ़िर दोनों गिरकर दम तोड़ चुके होते। लेकिन दो दिन के निराहार जीवन ने बिल्ले का वज़न आधा कर दिया था। शायद इसीलिए वह कौवा बिल्ले को सुरक्षित नीचे उतार लाया, जबकि यह आसान काम न था। फिर क्या था? बिल्ला सिर पर पाँव रखकर भागा। उसको डर था कि कहीं कौवा उसे मज़बूत चोंच के ताबड़तोड़ प्रहार से घायल न कर दे!

"बचाओ, बचाओ!" घबराये हुए कौवे ने आवाज़ दी। और फिर "बचाओ, बचाओ!" की रट लगाने लगा। इसके अलावा कुछ बोल न सका!

दूसरे कौवे उड़कर नीचे आये :

"क्या हुआ रे? क्या बिल्ले ने हमला किया था?"

"नहीं, नहीं!" कौवे ने विरोध किया। वह अपने सम्बन्धियों और दोस्तों के सामने शर्मिन्दा नहीं होना चाहता था। "दरअसल ऐसी कोई बात नहीं है!"

"फिर बताओ न, क्या हुआ?" सभी ने ज़ोर देकर पूछा।

"भाइयो, कोई घबराने की बात नहीं," कौवे ने बात बनाते हुए कहा। "मैंने छत पर एक ख़ूब मोटा-ताजा बिल्ला देखा। मेरा मन ललचाया और मैंने उसे मारने का फ़ैसला किया। बिल्ले का शिकार! क्या बढ़िया दावत होती? अपने दोस्तों को बुलाता और जैसाकि आप सब जानते हैं – आज मेरा जन्मदिन भी है। मैंने आव देखा न ताव, बस उसकी गरदन पकड़ ली और उसे नीचे लिए आ रहा था। पर ससुरा बहुत वज़नी था। अफ़सोस! उसे छोड़ना पड़ा ..."

"वाह रे दिलेर!" कौवों ने उसकी तारीफ़ की। "बहुत ख़ूब! शिकार और मोटू बिल्ले का! शाबाश, मेरे शेर।"

और बिल्ले मियाँ इस वक़्त छत का सफ़र पूरा करके सीढ़ी के नीचे खाने में जुटे हुए थे। कुत्ते बाबिक ने उसे एक हड्डी उपहार में दी। भूखा बिल्ला जल्दी-जल्दी उसे चबाये जा रहा था।

"भाई, तुम्हारी छतवाली नौकरी समाप्त हो गयी है?" बाबिक ने विनम्रता से पूछा। उसने भूखे दोस्त को हैरानी से देखा। "भाई, क्या टर्की चिड़िया का मांस जायक़ेदार होता था?"

"बेहद ख़राब। छोड़ो भी उसकी बात। सूखा और जला-भुना, ऊपर से ढेर सारा नमक-मिर्च डाल देते थे। बताओ, उसे कौन खायेगा। मैंने तो इंकार कर दिया।" बिल्ले ने कुत्ते को समझाया। "सच, ऐसी चौकीदारी से बाज आया। क्या ख़ूब? एण्टेनों की रखवाली। अब तुम्हीं बताओ : जब मेरे पास अपना टी.वी. सेट नहीं है, तो मैं पराये एण्टेनों की चौकीदारी क्यों करता फिरूँ? छत पर आख़िर मेरी जागीर तो है नहीं! मैंने तुरन्त फ़ैसला किया और कौवे की पीठ पर बैठकर नीचे चला आया।"

"शाबाश, मेरे दोस्त!" कुत्ते ने हैरानी से कहा।

थोड़ी देर बाद घुमक्कड़ बिल्ले ने एक प्याला दूध पिया और सीढ़ी के कोने में बिछे बिस्तर पर आराम से लेटकर सोचने लगा :

"दादा जी ठीक ही कहते थे : तिकड़मी बिल्ला रास्ता ढूँढ़ ही लेता है।"

रोबोट और तितली

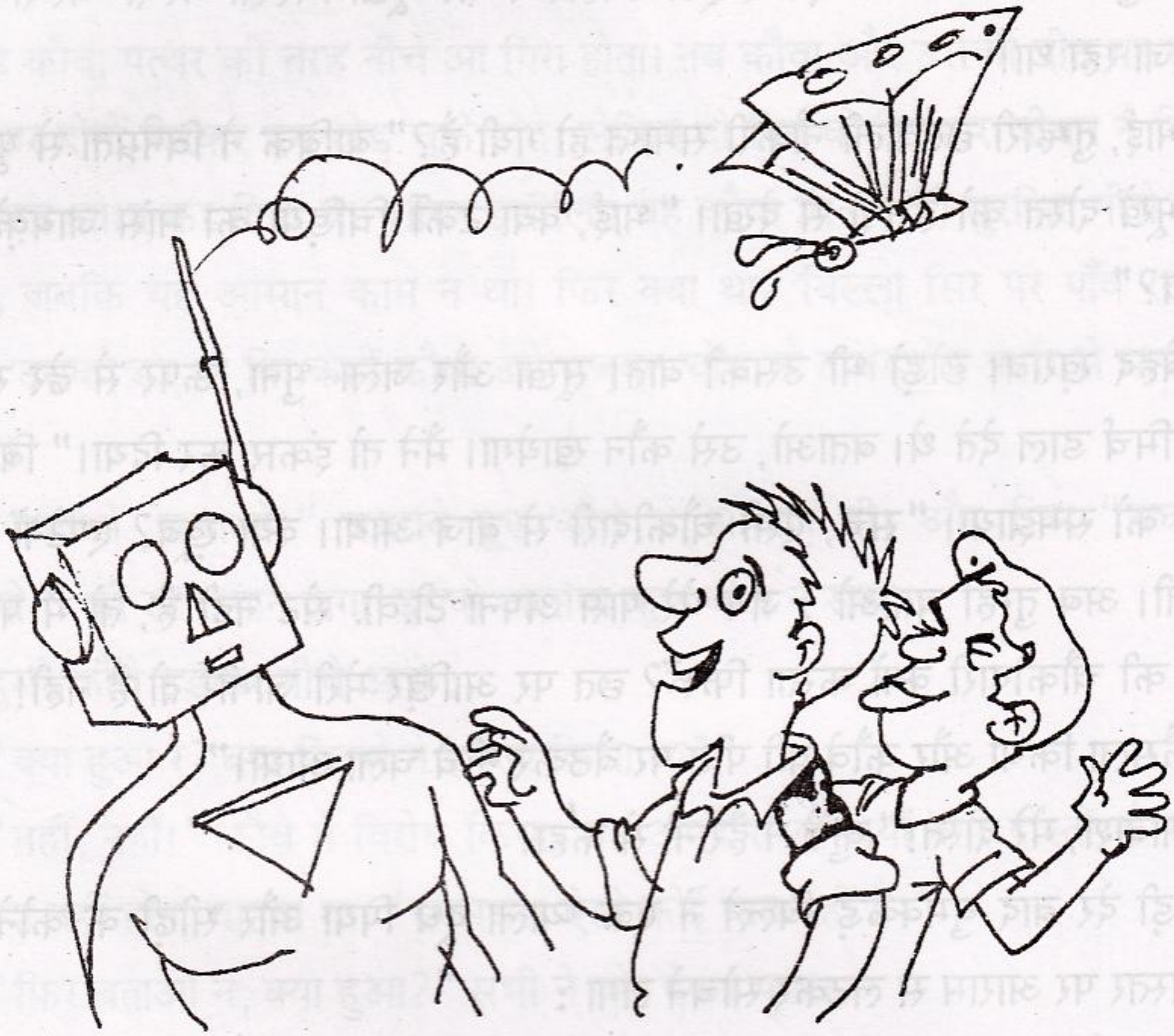

रोबोट प्रदर्शनी हॉल के बिल्कुल कोने में खड़ा था, लेकिन भीड़ उसे हमेशा घेरे रहती थी। यूँ तो वहाँ वैज्ञानिक चमत्कार की बहुत-सी चीज़ें थीं। पर रोबोट का एक प्रमुख आकर्षण था। सभी तरह के छोटे-बड़े दर्शक कई-कई बार उसे देखने आते। और उसके हिलते हुए भारी लौह हाथों, बड़े-से चौकोर सिर और उसकी आँख की मद्धिम नारंगी रोशनी को एकटक निहारते रहते थे।

रोबोट अपने विशाल हाथों और सिर को घुमाने के अलावा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर भी दे सकता था। लेकिन सभी तरह के प्रश्नों का उत्तर दे पाना उसके लिए सम्भव न था। वह केवल उन्हीं प्रश्नों के उत्तर देता था, जो प्रश्न-तालिका में एक निश्चित क्रम में

लिखे हुए थे। वह प्रश्न-तालिका पास ही दीवार पर टँगी थी। दर्शक उन प्रश्नों को पढ़ते और बारी-बारी से रोबोट से पूछते।

"तुम्हारा नाम क्या है?" यही पहला प्रश्न था।

"मेरा नाम दोनदोन है।"

"तुम्हारा जन्मस्थान?" दूसरा सवाल था।

"मेरा जन्म एक प्रयोगशाला में हुआ था।"

"अभी तुम क्या कर रहे हो?" तीसरा सवाल किया जाता।

"अभी मैं कुछ सीधे-सादे प्रश्नों के उत्तर दे रहा हूँ!"

यह कहकर रोबोट धीरे से हँसता :

"हा, हा, हा।"

दर्शक भी इस लतीफ़ेदार उत्तर को सुनकर हँसते और जी भरकर हँस लेने के बाद फिर पूछने लगते :

"कौन-सी चीज़ तुम्हें बहुत पसन्द है और कौन-सी चीज़ विशेष नापसन्द?"

"मशीन का तेल मुझे बहुत पसन्द है और जैमवाली आइसक्रीम बिल्कुल नापसन्द!"

दर्शक ज़ोर का ठहाका लगाते और प्रश्न-तालिका को देखकर पाँचवाँ प्रश्न पूछते :

"रोबोटों का भविष्य कैसा है?"

"रोबोटों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है!"

"और तुम कौन-सा काम करते हो?"

"मैं उन सभी नियोजित कार्यों को पूरा करता हूँ, जो मुझे सौंपे जाते हैं।"

रोबोट के लिए अन्तिम प्रश्न था :

"हम दर्शकों के लिए तुम्हारा सन्देश क्या है?"

"मेरी ओर से आपको बेहतर स्वास्थ्य और सफल जीवन की शुभकामनाएँ।"

रोबोट यह कहता हुआ अपना बायाँ पैर उठाता और फ़र्श पर पटक देता। लेकिन रोबोट की इस खुशी से प्रदर्शनी हॉल का फ़र्श काँप उठता! और फिर आती नये जिज्ञासु दर्शकों की भीड़, पुनः उन्हीं प्रश्नों के उत्तर सुनायी देने लगते, जो क्रमवार प्रश्न-तालिका में शामिल थे। रोबोट बिना थके उत्तर देता रहा, वह ज़रूरत पर हँसता था, पैर पटकता था या अपने हाथों को हिलाता था। और तो और, अपनी नारंगी आँख भी मज़े से झपकाता था।

"शाबाश! बेहिचक अपना प्रोग्राम पूरा करता है। सचमुच रोबोटों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।" बुजुर्ग प्रशंसा करते। बच्चे इतने खुश होते कि उसके पैरों के पास ही जमकर बैठ जाते थे और उठने का नाम तक न लेते थे।

"बच्चो, चलो, देर हो रही है!" मम्मी-पापा आवाज़ देते। "चलो, आइसक्रीम ख़रीदी जाये।"

"आइसक्रीम नहीं मशीन का तेल!" बच्चे रोबोट की नक़ल करते और रोबोट अपनी नारंगी आँख झपकाता और हाथ हिलाकर विदा का भाव प्रदर्शित करता था।

रात होते ही प्रदर्शनी हॉल में ऊब भरा सन्नाटा छा जाता और दोनदोन बिना हिले-डुले कोने में खड़ा रहता। दिन-भर की धमा-चौकड़ी और दर्शकों द्वारा की गयी अपनी वाहवाही को याद करता रहता था। उसका लौह-हृदय खुशी से फूला न समाता था। क्या यह उसकी शानदार सफलता न थी। वह नाक चढ़ाकर प्रदर्शनी की दूसरी वस्तुओं को देखता : इन मशीनों और स्वचालित यन्त्रों ने तो कभी सपने में भी ऐसी प्रशंसा न सुनी होगी। वे सभी मिलकर मेरी बराबरी कर सकते हैं भला!

नया दिन आता, प्रदर्शनी हॉल का दरवाज़ा खुलता और हॉल में पहले की तरह भीड़ भर जाती थी। दर्शक क्रमवार वही-वही प्रश्न पूछने शुरू करते और फिर प्रशंसकों की तारीफ़ और कहकहे गूँजते रहते थे। इस तरह दिन-रात बीतते रहे। यह क्रम बखूबी चला करता, यदि एक रात खिड़की से उड़कर आयी एक तितली ने काम न बिगाड़ा होता!

वह दोनदोन की नारंगी आँख की ओर आकर्षित हुई जो अँधेरे में तेज़ी से चमक रही थी।

तितली रोबोट के कन्धे पर बैठ गयी, शीशे की आँख को अपने पंख से छूकर मायूसी से बोली :

"अहा, कितना शीतल प्रकाश है!"

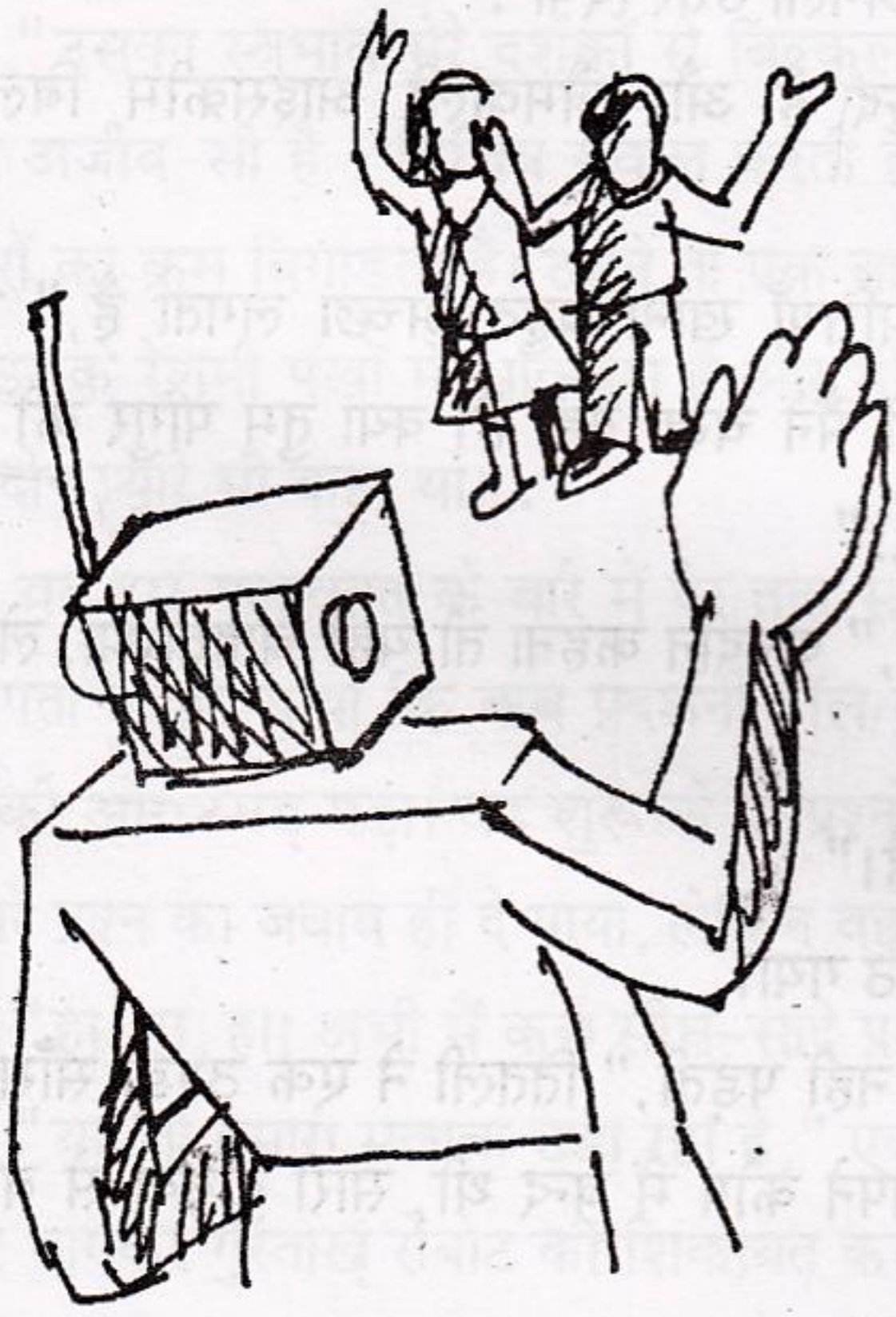

"यह प्रकाश नहीं, मेरी आँख है, आँख," रोबोट कहना तो यही चाहता था। लेकिन वह सिर्फ़ पहले नम्बर का उत्तर दे पाया :

"मेरा नाम दोनदोन है!"

"हाँ?" तितली बड़ी खुश हुई कि इत्ता बड़ा और ऐसा ताक़तवर प्राणी उस जैसी मामूली तितली से बातें कर रहा है। "और मैं एक तितली हूँ। लोग प्यार से मुझे नन्ही तितली कहते हैं। रात में नींद नहीं आयी! बस, घूमने निकल पड़ी।"

"मेरा जन्म एक प्रयोगशाला में हुआ था," रोबोट ने दूसरे नम्बर का उत्तर ही दिया।

"प्रयोगशाला... यह तो कोई अच्छा-सा देश होगा," नन्ही तितली ने अपने पंखों को झटकते हुए कहा। "लेकिन मेरा जन्म एक पुष्पित पांगुर के पेड़ पर हुआ था। क्या तुमने कभी पांगुर के वृक्ष देखे हैं?"

"अभी मैं कुछ सीधे-सादे प्रश्नों के उत्तर दे रहा हूँ! हा, हा, हा!" रोबोट ने कहा।

नन्ही तितली ज़रा झेंप गयी। उसके चमकीले पंख फीके पड़ गये।

"भाई, माफ़ करना!" वह धीरे से फुसफुसायी। "मैं अभी अक्ल की कच्ची हूँ। परसों ही तो मैंने आँखें खोली हैं, मेरी कोषावस्था थी न! मेरे बुज़ुर्गों ने मुझे अभी यही सिखाया है कि पक्षियों से बचकर रहना चाहिए और चमगादड़ों से तो ख़ासकर।..."

दोनदोन ने अपने प्रोग्राम के अनुसार अगला उत्तर दिया :

"मशीन का तेल मुझे बहुत पसन्द है और जैमवाली आइसक्रीम बिल्कुल नापसन्द!"

"और मुझे पांगुर की नरम-नरम पत्तियाँ खाना बहुत अच्छा लगता है," नन्ही तितली ने कहा। "पर मशीन का तेल तो मैंने चखा नहीं है। क्या तुम पांगुर की पत्ती चखोगे? मैं उसे तुम्हारे लिए ले आऊँगी।..."

"हाँ, हाँ ले आओ, खुशी से चखूँगा," दोनदोन कहना तो यही चाहता था, लेकिन पाँचवें नम्बर का उत्तर दे पाया :

"रोबोटों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।"

यह सुनते ही नन्ही तितली का जी बैठ गया।

"तुम्हारी गोल-मोल बातें मेरे पल्ले नहीं पड़तीं," तितली ने एक ठण्डी साँस ली। "भाई, मैंने तो पहले ही कहा कि मैं अपने कोष में बन्द थी, सारी दुनिया से बेख़बर थी।"

"मैं उन सभी नियोजित कार्यों को पूरा करता हूँ जो मुझे सौंपे जाते हैं," दोनदोन ने उत्तर दिया।

"भाई, माफ़ करना! अब मुझे जाना है," नन्ही तितली ने कहा। "अलविदा, दोनदोन प्यारे!"

"मेरी ओर से आपको बेहतर स्वास्थ्य और सफल जीवन की शुभकामनाएँ,"

दोनदोन ने भारी आवाज़ में कहा और अपना इस्पाती पैर पटक दिया।

"धन्यवाद!" तितली ने कहा और रोबोट के गालों को अपने नाज़ुक पंखों से थपथपा दिया। उसके बाद नन्ही तितली उड़ गयी।

एकनेत्रीय रोबोट खोया-खोया-सा उस ओर देर तक देखता रहा, जिधर नन्ही तितली उड़कर गयी थी। वह बड़ी देर तक व्याकुल रहा, उन अजीब ख़यालों में खोया रहा, जो इससे पहले कभी उसके लौह-मस्तिष्क में आये न थे।

"उसका स्वभाव मेरे दर्शकों से बिल्कुल भिन्न है," उसने सोचा। "उसकी अक्ल ज़रा अजीब-सी है : विचित्र सवाल करती है, नियोजित प्रश्नों से कतराती है और मेरे उत्तरों का क्रम बिगाड़ती है। उसने तो एक बार भी मेरी तारीफ़ नहीं की।... पर कुछ भी हो उसके रेशमी पंखों में आकर्षण है और मीठी बोली में जादू। चलते समय उसने मुझे दोनदोन प्यारे भी कहा था।..."

वह इस मुलाक़ात के बारे में देर तक सोचता रहा कि सुबह हो गयी। उसे तो यह भी पता न लग पाया कि कब प्रदर्शनी हॉल का दरवाज़ा खुला और दर्शकों का सैलाब उसकी ओर उमड़ पड़ा। वह शुरू के दो प्रश्नों के उत्तर देना ही भूल गया। किसी प्रकार तीसरे प्रश्न का जवाब ही दे पाया, लेकिन वह भी ग़लत क्रम के साथ :

"हा, हा, हा! अभी मैं कुछ सीधे-सादे प्रश्नों के उत्तर दे रहा हूँ!"

"यह तो हमारा मज़ाक़ उड़ा रहा है," एक अत्यन्त सम्मानित दर्शक नाराज़ हो गया और भागकर गुस्ताख़ रोबोट की शिकायत करने मुख्य अभियन्ता के पास पहुँचा।

लेकिन तब तक दोनदोन की तबीयत ठीक हो चुकी थी और अब वह क्रम से सही-सही उत्तर देता जा रहा था। फिर उसे पहले की तरह ज़ोर-शोर से सराहा जा रहा था।

"शाबाश, मेरे शेर! सारे उत्तर तो ठीक-ठीक मिल रहे हैं। उससे बड़ी उम्मीदें हैं।"

"अफ़सोस!" रोबोट उदास हो गया। "काश, नन्ही तितली भी यह सब सुन पाती।

इत्ती तारीफ़ पर तो निहाल हो उठती वह। और तब मेरी ख़ूब प्रशंसा करती।... काश! वह इस रात फिर आ जाती! और अगर ... अगर वह किसी चमगादड़ का शिकार हो गयी तो?" उसके बेचैन हृदय में एक ऐंठन-सी हुई – पर ऐसा तो कभी न हुआ था। अचानक तितली आ पहुँची।

"मुझे रात की सैर अच्छी लगती है! अब मैं तुम्हारे कन्धे पर बैठकर आराम करूँगी। अहा, यहाँ कितना सुख-चैन है!" तितली फुसफुसायी।

रोबोट के लौह-वक्ष पर सुकोमल स्पर्श की एक सिहरन-सी दौड़ गयी।

"मेरा नाम दोनदोन है।"

"भाई, मुझे तुम्हारा नाम याद है," तितली ने शिष्टता से कहा। "लेकिन तुम्हारे भाई-बहन तो हैं न?"

दोनदोन कहना चाहता था कि वह इस दुनिया में अकेला है, इस प्रदर्शनी हॉल और शहर तक में उसका कोई नहीं है! लेकिन वह दो नम्बर के उत्तर पर ठहर गया :

"मेरा जन्म प्रयोगशाला में हुआ था।"

"यह तो तुमने बताया ही था," तितली ने याद दिलाते हुए कहा। "भाई, तुम बार-बार

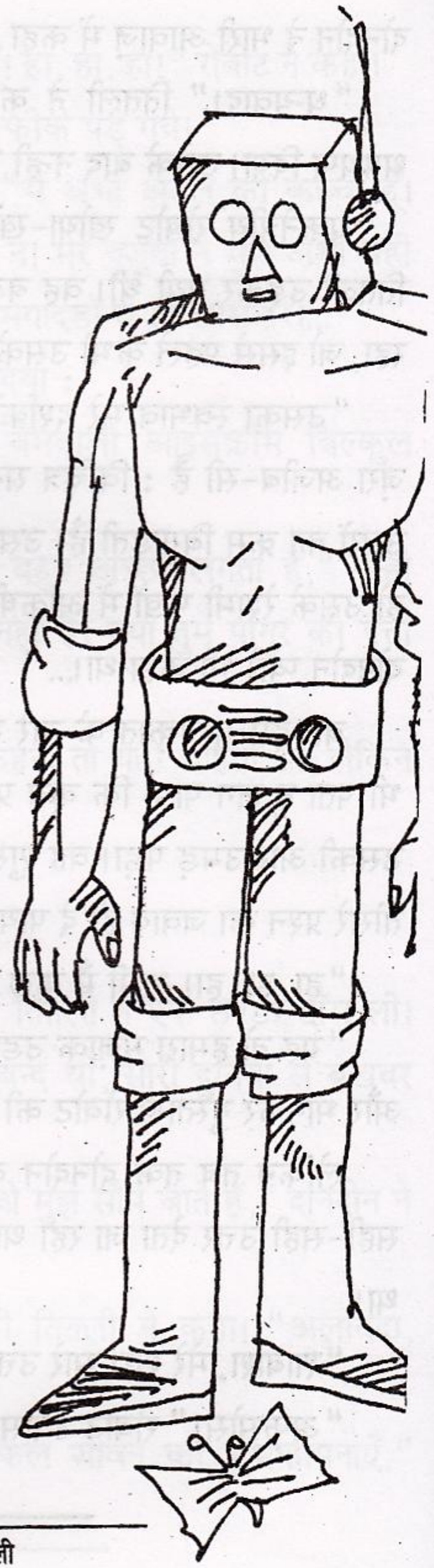

एक ही रट लगाते हो। क्या तुम थकते नहीं? अच्छा, अब मैं चली! मुझे ज़ोर से भूख लगी है। सुबह से कुछ खाया-पिया नहीं। नमस्ते, प्यारे दोनदोन! फिर मिलेंगे।"

यह कहकर उसने अपने नाजुक पंखों से रोबोट के गाल थपथपाये और खिड़की के बाहर उड़ गयी। दोनदोन उसे देर तक देखता रहा, उसकी नारंगी आँख ऐसी अनोखी चमक के साथ कभी पहले न चमकी थी।

"वह शीघ्र ही आयेगी," उसका लौह-हृदय खुशी से झूम उठा। "उसे मेरी दोस्ती पसन्द है। वह लौटकर प्यार से मेरे कन्धे पर बैठ जायेगी। काश, यह रात कभी ख़त्म न होती! तब मैं शायद नये-नये शब्द बोलना सीख जाता, अपने प्रोग्राम के अलावा कुछ और कह पाता? तितली को धन्यवाद देता और कहता कि इस दुनिया में तेरे सिवा मेरा और कोई नहीं है।..."

दोनदोन की नारंगी आँख खिड़की पर टिकी रही। वह बड़ी बेसब्री से उसकी वापसी का इन्तज़ार करता रहा।

वह लौटी, लेकिन बदहवास-सी! वह दौड़ती हुई आयी और रोबोट के सीने पर झपट पड़ी।

"मुझे बचा लो!" नन्ही तितली ज़ोर-ज़ोर से हाँफते हुए बोली। "वो मेरे पीछे पड़ा है।"

और सचमुच एक काली छाया खिड़की पर चमकी। झपटकर एक चमगादड़ प्रदर्शनी हॉल में घुस आया।

"मुझे उस राक्षस से बचाओ!" तितली रोबोट के सीने से चिपट गयी। "वह मुझे निगल जायेगा!"

रोबोट ने बहादुरी से सीना तानकर कहना चाहा : "डरो नहीं! मैं यहाँ की सबसे शक्तिशाली मशीन हूँ। क्या मजाल, जो कोई तुम्हें छू ले?"

लेकिन उत्तर भिन्न था :

"मेरा नाम दोनदोन है।"

चमगादड़ ने रोबोट का चक्कर लगाया और उसकी छाती से चिपकी हुई तितली को देख लिया।

"प्यारे दोनदोन, मुझे बचा लो!" तितली गिड़गिड़ायी।

"चल भाग यहाँ से!" रोबोट चमगादड़ को डाँटना चाहता था, लेकिन फिर वही नियोजित उत्तर सुनायी पड़ा :

"मेरा जन्म प्रयोगशाला में हुआ था।"

चमगादड़ तितली पर झपटा, और उसने अपने पैने दाँत उसके गड़ा दिये। पर उसे निगल न पाया। नन्ही तितली रोबोट के पैरों पर गिर पड़ी।

"हाय, मेरा पंख..." तितली का विलाप सुनायी दिया। कई बार रोबोट का चक्कर लगाने और तितली को न पकड़ पाने के कारण चमगादड़ खिड़की से बाहर उड़ गया।

"उसने मेरा पंख नोच लिया है। पर तुमने मुझे बचाया क्यों नहीं? आह, दोनदोन!" तितली ने रोते हुए कहा।

"अभी मैं कुछ सीधे-सादे प्रश्नों के उत्तर दे रहा हूँ!" दोनदोन ने झट से यह उत्तर दिया और हँसने लगा : "हा, हा, हा!"

यह उत्तर सुनते ही रोबोट की पीठ पर एक थरथराहट-सी हुई। पर दूसरा कोई उत्तर तो वह दे न सकता था।

असहाय तितली फ़र्श पर पड़ी तड़फड़ा रही थी, वह अपने पांगुर के वृक्ष तक उड़कर पहुँचना चाहती थी, लेकिन ... लेकिन एक लट्टू की तरह सिर्फ़ एक ही जगह पर पड़ी नाचती, तड़फड़ाती रही।

"काश, तुम मेरे दर्द को जान पाते!" तितली धीरे से कराह उठी।

"मशीन का तेल मुझे बहुत पसन्द है और जैमवाली आइसक्रीम बिल्कुल नापसन्द।" रोबोट ने जवाब दिया।

"क्या कहा?" तितली को अपने कान पर विश्वास न हुआ। "तो तुम्हें मेरे लिए ज़रा भी अफ़सोस नहीं है?"

"रोबोटों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।" उत्तर मिला।

"हाय, तुम कितने हृदयहीन और निर्दय हो!" मरणासन्न तितली ने क्षीण स्वर में कहा।

"मैं उन सभी नियोजित कार्यों को पूरा करता हूँ, जो मुझे सौंपे जाते हैं।"

लेकिन तितली दम तोड़ रही थी। उसने अन्तिम बार अपने एक बचे हुए पंख को ऊपर उठाया और धीरे से नीचे झुका लिया, ताकि उसे फिर कभी न उठाना पड़े।

"अलविदा, दोनदोन प्यारे..." उसने कँपकँपाती आवाज़ में कहा और मर गयी।

"मेरी ओर से आपको बेहतर स्वास्थ्य और सफल जीवन की शुभकामनाएँ।" और रोबोट ने पहले की तरह झनझनाते हुए अपना पैर फ़र्श पर दे मारा।

प्रदर्शनी हॉल में गहरा सन्नाटा छा गया। तितली रोबट के पैर तले निर्जीव पड़ी थी। सुबह हो चुकी थी। प्रदर्शनी हॉल खुला। जिज्ञासु दर्शकों की भीड़ अन्दर घुस आयी और रोबोट को घेरकर खड़ी हो गयी।

"तुम्हारा नाम क्या है?" पहला प्रश्न किया गया।

"उसने मुझे दोनदोन प्यारे कहा।..." रोबोट तो तितली की यादों में खोया था। उसके लौह हृदय में एक टीस-सी उठी। "मुझे अब फिर कोई 'दोनदोन प्यारे' न कहेगा।"

"तुम्हारा जन्मस्थान?" दूसरा प्रश्न किया गया।

"वह पांगुर के वृक्ष पर जन्मी थी... लेकिन मैंने तो न पांगुर के वृक्ष देखे हैं, न उनके फूल ही।..." रोबोट की आँख डबडबा आयी।

उसने तीसरे और यहाँ तक कि सभी प्रश्नों के उत्तर नहीं दिये। उस दिन न उसने हाथ उठाये, न पैर पटके और न नारंगी आँख ही झपकी।

रोबोट के मुख्य अभियन्ता को बुलाया गया। उसने दोनदोन का सीना ठकठकाया, हरेक पेच ठीक से कसा और सख़्त आवाज़ में बोला :

"हाँ, तो बताओ, रोबोटों का भविष्य कैसा है?"

"पां-गु-र..." रोबोट बड़ी मुश्किल से बस इतना ही कह पाया कि उसके सीने में तेज़ कड़कड़ाहट हुई और कुछ टूट-सा गया।

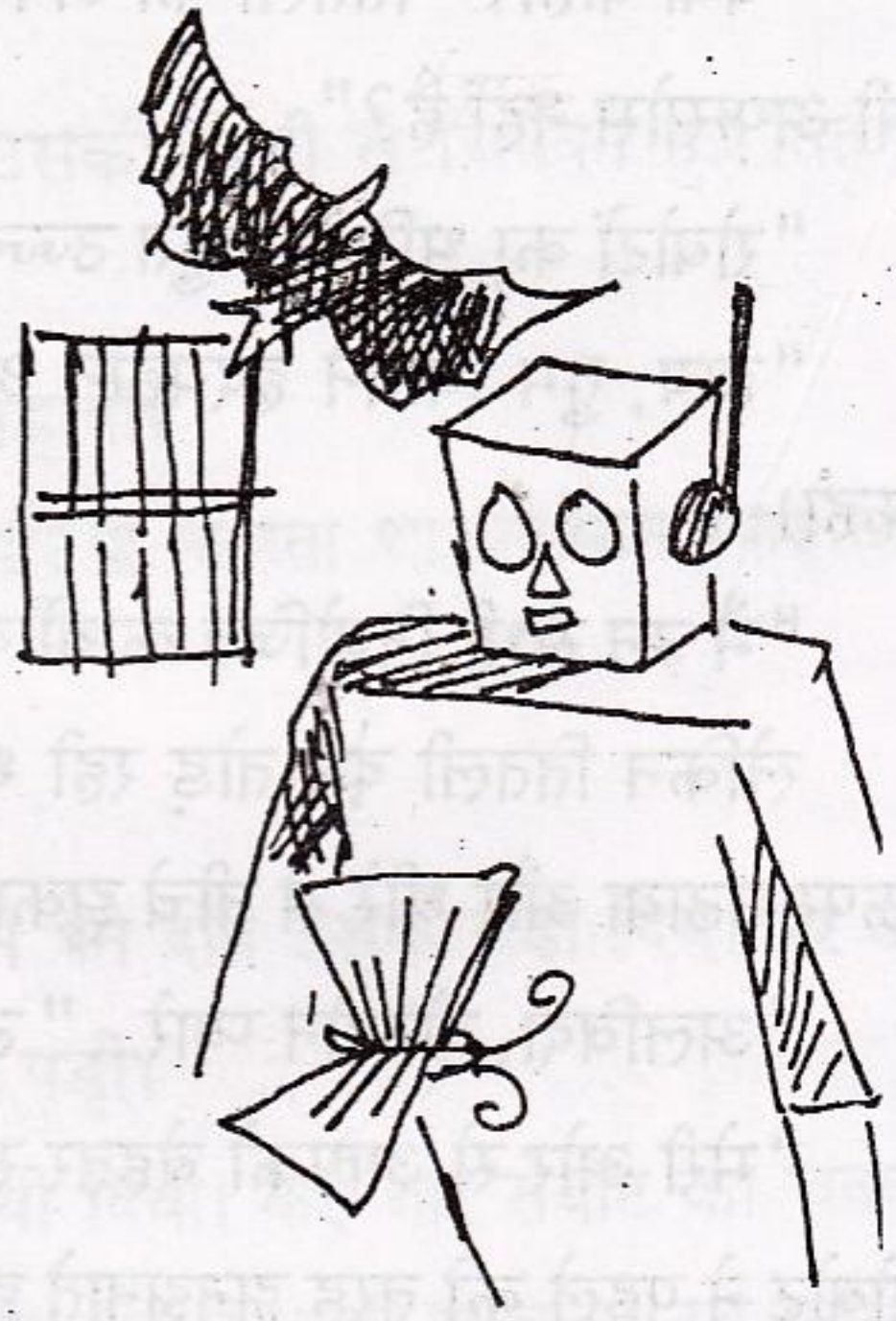

मुख्य अभियन्ता का चेहरा उतर गया। उसने कहा :

"खेद है कि हमारा रोबोट ख़राब हो गया।... हमेशा ठीक-ठाक रहता था, उसके काम में कभी कोई गड़बड़ी न थी। फ़िलहाल उसकी मरम्मत की जायेगी। अगर ठीक न हुआ तो उसे कूड़े में डालना होगा।"

रोबोट को एक बड़े-से सफ़ेद खोल से ढँक दिया गया और ऊपर एक तख़्ती लटका दी गयी : "मरम्मत के लिए।"

सफ़ेद आवरण के भीतर मौत का सन्नाटा छाया रहता था। लेकिन रात में जब पुष्पित पांगुर की ख़ुशबू और पत्तियों की सरसराहटें खुली खिड़की से आते हवा के झोंकों के साथ प्रवेश करती तो लगता कि सफ़ेद आवरण के भीतर से बहुत धीरे-धीरे टूटे-बिखरे स्वर सुनायी पड़ रहे हैं। शायद कोई बोलना सीख रहा है :

"नन्ही... ति... त-ली... पां... गु-र... द... र्द..."

जब नटखट हिमिका पिघली नहीं

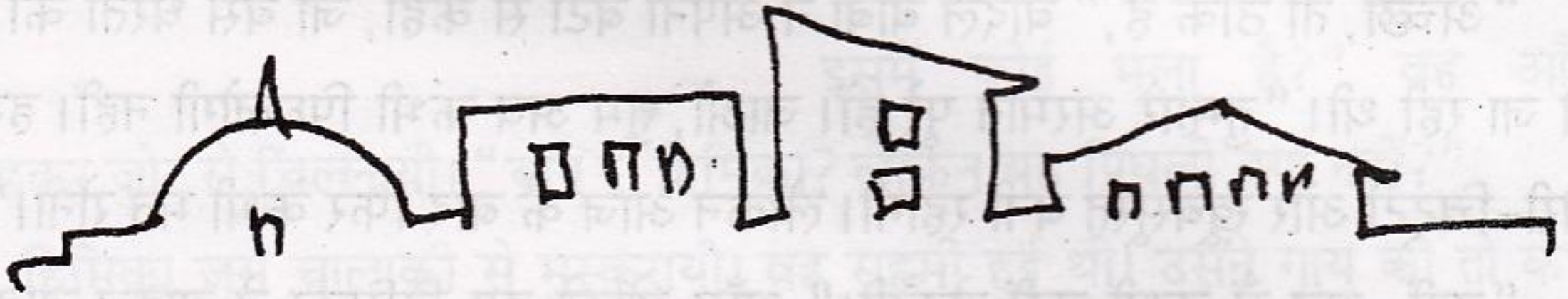

एक हिमिका धीरे-धीरे चक्कर खाते हुए आसमान से नीचे उतरती आ रही थी। बसन्त का मौसम क़रीब था, धरती तपकर गरम हो चुकी थी। शायद वर्ष का यह आख़िरी हिमपात था। इस हलके हिमपात में हिमकणों और हिमिकाओं की संख्या बहुत थोड़ी थी, पर वे आकार में बड़े और ख़ूबसूरत थे। लेकिन वह हिमिका तो सबसे बड़ी और सबसे ज़्यादा गोरी-चिट्टी थी।

"ओह," हिमिका ने नीचे की ओर देखा और फुसफुसाते हुए कहा : "कितनी विशाल है यह धरती, कैसा सुहाना है यहाँ का जीवन। बादल बाबा के पास रहते-रहते जी ऊबने लगा था। ... लेकिन यह माज़रा क्या है? आख़िर वहाँ पर हो क्या रहा है?" हिमिका ने ज़रा चौकसी से देखा कि उसके अपने भाई-बन्धु धरती पर उतरते ही पिघल-पिघलकर नष्ट होते जा रहे हैं, जैसे कभी उनका अस्तित्व ही न रहा हो! सिर्फ़

भीगा हुआ गहरा धब्बा वहाँ पर झलकता रहता था, जहाँ उजले हिमकण गिरकर ग़ायब हो जाते थे। यह धब्बा भी देखते ही देखते सूख जाता।

"तो क्या मैं भी पिघलने और नष्ट होने के लिए जन्मी हूँ?" हिमिका भय से काँप उठी। "तो क्या मैं भी मिट जाऊँगी? लेकिन मैं मरना नहीं चाहती। मैं इस लुभावनी धरती पर जीना चाहती हूँ। मैंने तो इसे पहली बार ही देखा है! आह, यह भाग्य कितना निर्मम है!"

इस तरह वह हिमिका रोते, आँसू बहाते, क़िस्मत पर पछताते और मायूसी से अपने उजले हाथ मलते धरती पर उतरती आ रही थी। आख़िर वह कर ही क्या सकती थी?

ऊपर से बादल बाबा अपनी लाड़ली बेटी को रोता हुआ देख रहे थे, उसकी दुखभरी बातें सुन रहे थे, उनका जी भर आया।

"अच्छा, तो ठीक है," बादल बाबा ने अपनी बेटी से कहा, जो बस धरती को छूने ही जा रही थी। "तुम्हारे अरमान पूरे हों। जाओ, तुम अब कभी पिघलोगी नहीं। हमेशा गोरी-चिट्टी और ख़ूबसूरत बनी रहोगी। लेकिन आज के बाद फिर कभी मत रोना।"

"नहीं, अब मैं कभी नहीं रोऊँगी।" आँसू पोंछते हुए हिमिका ने बादल बाबा से वायदा किया।

वह धीरे से बसन्तकालीन गरम धरती पर उतर आयी। और सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह हुआ कि वह हिमिका पिघली ही नहीं। गोरी-चिट्टी बैले नर्तकी-सी रूपवती हिमिका अपने सुडौल पैरों पर खड़ी थी। उसने चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी, ख़ुशी से फूली न समायी और फिर चरागाहों के आर-पार बर्फ़ के नन्हे-नन्हे जूते खटखटाते हुए दौड़ गयी।

इस बीच बादल बाबा बहुत दूर उत्तर की ओर उड़ गये। हिमपात थम गया। नीले आकाश पर अपना किरणजाल फैलाता हुआ सूरज चमकने लगा। जल्द ही हिमकणों और हिमिकाओं का नामोनिशान तक न रहा। चरागाह में जगह-जगह नन्ही-नन्ही

कोंपलें फूट रही थीं, डैण्डेलियन के सुनहरे दीप जगमगाने लगे थे और नयी घास हवा में सरसरा रही थी। अचानक एक गाय वहाँ आ पहुँची। जाड़े-भर वह तंग गोशाला में बन्द रही। अब ज़रा राहत मिली तो नन्हे बछड़े की तरह खुशी से कूदती-फाँदती और रँभाती हुई खुश हो रही थी। अचानक उसने उजली हिमिका को देखा :

"अरे, यह क्या बला है? या फिर इसमें कोई भला है?" वह आँखें फाड़कर ज़ोर से चिल्लायी। "बाप रे, हिमिका? लेकिन यह पिघली क्यों नहीं?"

हिमिका ज़रा चालाकी से मुस्कुरायी। वह सहमी हुई थी। उसने गाय को तो कभी देखा न था।

गाय ने रँभाते हुए कहा : "लो, फिर आ गया जाड़ा। हिमपात जो सिर्फ़ जाड़े में होता है। हिमिकाएँ भी तभी पायी जाती हैं। तो क्या अभी चरागाह में जाड़ा बैठा है? हाय रे, मुझे तो सर्दी लग जायेगी। आफ़त है, आफ़त!" और वह झट से मवेशीख़ाने में वापस भाग गयी।

हिमिका ने डरपोक गाय को एक तीखी, व्यंग्यभरी नज़र से देखा और आगे बढ़ चली। शीघ्र ही वह एक चौड़े राजमार्ग पर पहुँची। इस पक्की सड़क पर वह रात-दिन चलती रही। लेकिन सड़क थी भी इतनी लम्बी कि चुकने का नाम ही न ले। एक दिन हिमिका ने तेज़ी से दौड़ती हुई एक मोटरसाइकिल देखी। उसने आव देखा न ताव, उछलकर मोटरसाइकिल पर सवार हो गयी और मज़े से शहर चली आयी!

शहर में लोग गरमी के हलके कपड़े पहनकर घूम रहे थे। बच्चे आइसक्रीम खा रहे थे। हिमिका शहरी सड़कों पर घूमती, अठखेलियाँ करती एक पार्क में पहुँची। पेड़-पौधों पर नयी-नयी चटक हरी पत्तियाँ दिखायी पड़ रही थीं और क्यारियों में रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। नन्हे-मुन्ने बच्चोंवाली गाड़ियों में सो रहे थे, ज़रा बड़े बच्चे तिनपहिया साइकिलें चला रहे थे। कबूतर चारा चुग रहे थे। चंचल हिमिका को यह सब बड़ा अच्छा लगा। वह सुखद आश्चर्य से देख रही थी। "कितनी भाग्यशाली हूँ मैं कि बादल बाबा ने मेरी विनती सुन ली और मुझे पिघलने से बचा लिया।" हिमिका ने खुश होकर सोचा। "क्या यह दुख की बात न होती, अगर मुझे ऐसी प्यारी-प्यारी, सुन्दर-सुन्दर चीज़ें देखने को न मिलतीं!"

"भाइयो, वो देखो। वह रही हिमिका।" एक कबूतर ने अपने दोस्तों से चिल्लाकर कहा।

"सचमुच!" दूसरे कबूतरों ने हैरानी से कहा। "अरे हाँ, यह तो हिमिका है! न जाने क्यों पिघली ही नहीं। है भी तो कितनी ख़ूबसूरत!"

बच्चे दौड़कर आ पहुँचे और उसे घेरकर उकड़ूँ बैठ गये। वे उसे आश्चर्य से देखे जा रहे थे।

"शायद यह सफ़ेद प्लास्टिक की है!" उन्होंने आपस में कहा। "या हो सकता है कि काँच की बनी हो? लेकिन यह तो न प्लास्टिक की है, न काँच की। यह तो सचमुच एक हिमिका है। शायद जल्द ही

पिघल जाये।..."

लेकिन शोख हिमिका सिर्फ़ मुस्कुरायी। उसे बड़ा अच्छा लगा कि सभी उसे ध्यान से देखते हैं, उसमें रुचि लेते हैं और पलक-पाँवड़े बिछाये उसके पीछे-पीछे चलते हैं। उसने बच्चों से घिरे गोल घेरे के बीचोबीच ज़मीन पर धीरे से पैर मारा, झट से अपनी बाँहें फैला दीं और बर्फ़ीले तूफ़ानवाला फुर्तीला नृत्य करने लगी। और कमाल यह कि उसके नन्हे-नन्हे पैर ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे। अब वह गोरी-चिट्टी बैले नर्तकी की तरह लम्बे-चौड़े पार्क में थिरकती-सी उड़ रही थी। और उसके पीछे-पीछे बच्चे, यहाँ तक कि बड़े-बूढ़े भी प्रशंसा करते चल रहे थे :

"कितनी प्यारी है यह हिमिका! अद्‌भुत है! सचमुच प्रकृति का चमत्कार है!"

शाम हो चली थी। सड़क पर धुँधलका छा गया था और हिमिका के प्रशंसकों की भीड़ ग़ायब हो चुकी थी। कबूतर अपने रैन-बसेरों में छिप चुके थे। बच्चे घर की राह पर थे। उनके सोने का समय हो चुका था। अकेली हिमिका ही वहाँ रह गयी थी। वह बेतहाशा थकी हुई थी और उसका नन्हा हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। आख़िर उस बेचारी को भी आराम की ज़रूरत थी! लेकिन अब वह रात कहाँ पर गुजारे? थोड़ी दूर पर एक क्यारी में ट्यूलिप के फूल खिले थे। हिमिका ने झट से फ़ैसला किया और एक बड़े से फूल के अन्दर उछलकर जा पहुँची। फूल नरम और आरामदायक था। हिमिका मज़े से पैर फैलाकर एक मखमली पंखुड़ी पर सो गयी।

"आह!" ट्यूलिप सिहर उठा। "तुम कितनी ठण्डी हो! देखो, मैं सर्दी से काँप रहा हूँ!"

"घबराओ नहीं, मैं ज़रा आराम करके चली जाऊँगी।" हिमिका ने वायदा किया।

"नहीं! नहीं!" ट्यूलिप ने ज़ोरदार विरोध किया। "मुझसे यह सहा नहीं जायेगा। ऐसे तो मैं ठण्ड से अकड़ जाऊँगा! चलो, यहाँ से दफ़ा हो जाओ!"

ट्यूलिप का फूल उसे ऐसे ज़ोरदार झटके मारने लगा कि हिमिका के सामने निकल

भागने और कोई नयी जगह तलाशने के अलावा कोई और चारा न था।

निराश हिमिका एक लम्बी घास से चिपक गयी।

"यह कौन-सी बला है?" घास गुस्से में आयी। "सारे दिन मैं धूप खाती रही और अब इस बर्फ़ीली ठण्ड में जमने की नौबत आ गयी। ऐसे तो मैं पीली पड़कर मुर्झा जाऊँगी। अच्छा, तो तुम हिमिका हो। अरे बाबा, मेरी जान छोड़ दो। जाओ, भागो यहाँ से!"

हिमिका डरकर वहाँ से भाग निकली और सड़क के किनारे-किनारे चल पड़ी। वह बहुत थक चुकी थी और बड़ी मुश्किल से पैर घसीटते हुए चल रही थी। सब तरफ़ रात का सन्नाटा था। अँधेरा ही अँधेरा था। बस सड़क की फीकी बत्तियाँ जल रही थीं।

अकस्मात हिमिका ने किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी। वह ज़रा ठहरकर आहट लेने लगी। यह आवाज़ किसी खिड़की से आ रही थी। हिमिका ने एक झरोखे से अन्दर झाँककर देखा और झट से कमरे में पहुँच गयी।

एक बच्चा पलंग पर बैठा, सुबकियाँ ले-लेकर अपने चारों ओर नज़रें दौड़ा रहा था। लेकिन उसके माँ-बाप शायद गहरी नींद में सो रहे थे और बेटे की आवाज़ नहीं सुन पा रहे थे। बच्चे को रोता देखकर हिमिका को बड़ा अफ़सोस हुआ। वह झट से पलंग पर चढ़कर फुर्ती से कलाबाज़ियाँ खाने लगी। वह इतनी जल्दी-जल्दी और खुशी-खुशी उसे बहला रही थी कि थोड़ी देर में ही बच्चा खिलखिलाकर हँसने लगा। उसके आँसू ग़ायब हो गये।

"ला-ला-ला!" बच्चा गाने लगा। उसने अपनी नन्ही, गरम, गुलाबी हथेली हिमिका की तरफ़ बढ़ा दी। वह उसकी हथेली पर कूद गयी। बच्चा उसे गाल पर मलने, गेंद की तरह उछालने लगा। और फिर उसे चखा भी। वह नींद आने तक हिमिका के साथ खेलता रहा। हिमिका को भी नींद आने लगी। वह बच्चे की छाती से सटकर सो गयी और खुश थी कि गरम सुरक्षित जगह पर आराम कर रही है।

अचानक खाँसने की आवाज़ सुनकर वह जाग गयी। बच्चा इतनी ज़ोर-ज़ोर से खाँस रहा था कि उसकी माँ की नींद खुल गयी। उसने आकर बेटे का माथा छुआ।

"अरे, बदन तो तप रहा है!" उसने थर्मामीटर लगाया और देखा। बुखार 104 डिग्री सेण्टीग्रेड था।

माँ ने डॉक्टर को फ़ोन किया। थोड़ी ही देर में एम्बुलेंस गाड़ी पर डॉक्टर आ पहुँचा।

"इसे निमोनिया है!" डॉक्टर ने बच्चे की जाँच-परख के बाद कहा।

"मालूम नहीं इसे ठण्ड कैसे लग गयी," परेशानी से माँ ने कहा। "कमरा तो गरम है, कहीं से हवा नहीं आ रही है। शाम को जब मैं उसे सुला रही थी, वह बिल्कुल ठीक था।"

"उसे अभी अस्पताल ले जाना होगा।" डॉक्टर ने कहा।

बच्चे को स्ट्रेचर पर लिटाकर एम्बुलेंस गाड़ी तक ले जाया गया। उसका पलंग ख़ाली हो गया। हिमिका कम्बल के नीचे से निकली और खिड़की में से होकर बाहर उड़ गयी। हिमिका को बड़ा अफ़सोस था – तो क्या उसके ही कारण बच्चा बीमार पड़ गया?

शहर में सभी गहरी नींद में सो रहे थे। सिर्फ़ एक खिड़की से, बाल्कनी की मुँडेर से होकर रोशनी आ रही थी। मेज़ पर एक लैम्प जल रहा था और इसके प्रकाश में हिमिका ने देखा कि पके बालवाला कोई व्यक्ति किताब पर सिर झुकाये बैठा है। वह रोशनदान के ज़रिये कमरे में जा पहुँची। बूढ़ा आदमी मेज़ के सामने बैठा बुदबुदा रहा था।

"मेरी ज़िन्दगी के अब ज़्यादा दिन शेष नहीं रहे। मेरा जीवन व्यर्थ नहीं गया। मैंने विश्व ज्ञान के बारे में बहुत-सी किताबें लिखी हैं, यह भी लिखा है कि संसार में कुछ भी चिरजीवी नहीं, सब कुछ परिवर्तनशील है : हर फूल मुरझा जाता है, तारे बुझ जाते हैं, रात के बाद सुबह होती है। और बसन्त आते ही सूर्य की तेज़ किरणों से जाड़े की बर्फ़ पिघलती है... लेकिन यह तो क्या?"

बूढ़े विद्वान ने देखा कि एक बड़ी-सी हिमिका मेज़ पर उतर आयी है।

"क्या सचमुच मेरी आँखें धोखा दे रही हैं?" बूढ़े आदमी ने आँखें मलकर ऐनक लगायी और फिर एक बार उसे ग़ौर से देखा : सचमुच जाड़े की एक बड़ी-सी उजली हिमिका उसकी एक मोटी किताब पर जमी बैठी थी। बूढ़े आदमी ने उसे अपनी उँगलियों से छूकर देखा – वह तो बर्फ़ की तरह ठण्डी थी।

"यह कैसी विचित्र घटना है!" वह ज़ोर से चिल्लाया। "यह तो अजूबों में एक अजूबा है... मेरी समझ से बाहर है... मुमकिन है कि मौसम बदल गया हो और उत्तरी हवाओं के कारण हिमपात होने लगा हो?"

वह व्यक्ति बाल्कनी पर निकल आया और अपने चारों तरफ़ ग़ौर से देखने लगा। बाहर तो गरम और सूखा मौसम है और न उत्तरी हवाएँ ही चल रही थीं, न हिमपात ही हो रहा था। वह व्यक्ति अपने अध्ययन कक्ष में फिर लौट आया, जहाँ पर तपते हुए लैम्प के ठीक नीचे एक ख़ूब ठण्डी हिमिका चमक रही थी।

"क़तई विश्वास नहीं होता।" विद्वान बुज़ुर्ग ने ठण्डी साँस लेकर कहा। "लगता है कि न पिघलने

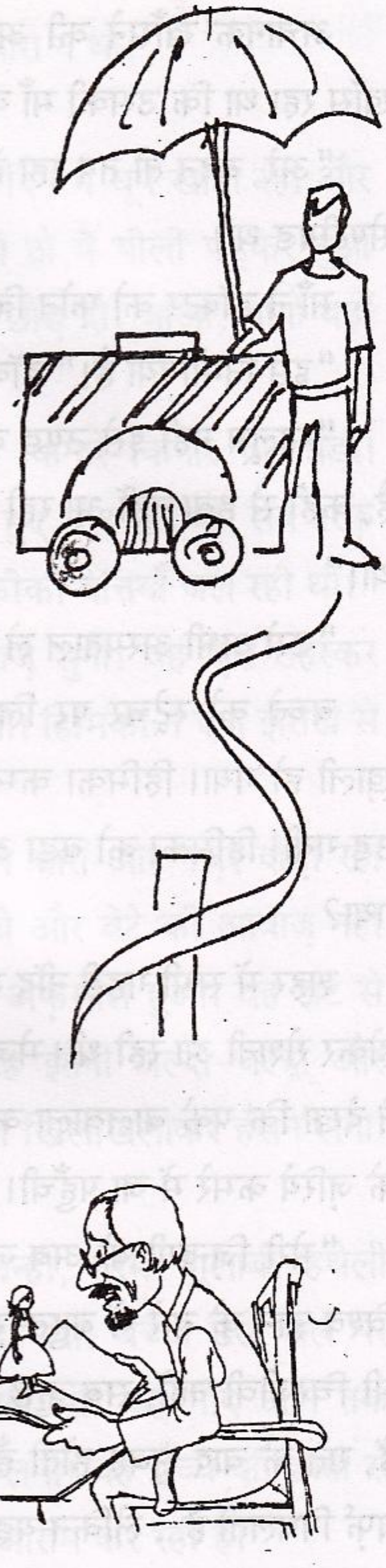

वाली हिमिकाएँ भी होती हैं जिनके ऊपर गरमी का असर नहीं पड़ता। और उन पर प्रकृति के नियम लागू नहीं होते। तो मैं अब तक अपनी सभी किताबों में ग़लत बातें लिखता रहा। क्या मेरे जीवन-भर की मेहनत बेकार हो गयी? क्या मुझे यह कोसते हुए मरना होगा कि मैंने अपने अज्ञान से दूसरों को गुमराह किया है?" बूढ़े ने अपने झुर्रीदार हाथों से चेहरे को छिपा लिया। उसके स्वर में निराशा और पश्चाताप की एक ऐसी झलक थी कि हिमिका का दिल दुख से दहल उठा। उसे शर्म आयी। वह मेज़ पर से उठी और रोशनदान से उड़कर बाहर निकल गयी।

"तो मैं दूसरों की परेशानियाँ ही बढ़ाती हूँ, उन्हें दुखी करती हूँ। आख़िर क्यों है ऐसा?" उसने मन ही मन खुद से पूछा।

हिमिका ज़मीन पर उतरकर एक घर के तहख़ाने में पहुँची और एक गहरे अँधेरे सूराख में घुस गयी।

"मैं अब यहीं रहकर अगले जाड़े का इन्तज़ार कर लूँगी। अकारण किसी का जी दुखाने से क्या फ़ायदा? और इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है।"

सूराख में अँधेरा ही अँधेरा था, वहाँ सीलन और फफूँदी की दुर्गन्ध आ रही थी। कभी-कभी एक कीड़ा या मकड़ी इसमें रेंगती हुई चढ़ आती, लेकिन हिमिका की बर्फ़ीली साँस को महसूस करते ही वहाँ से रफ़ूचक्कर हो जाती। आख़िरकार उसे एकान्त अँधेरे से इतनी नफ़रत हो उठी कि वह उकताकर सूराख से बाहर निकल भागी।

शहर में ख़ूब गरमी पड़ रही थी। एक आइसक्रीमवाला अपनी ठेला-गाड़ी के पास ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ लगाकर तरह-तरह की आइसक्रीम बेच रहा था :

"जायक़ेदार ठण्डी आइसक्रीम! चाकलेट, साफ़्टी और क्रीमवाली आइसक्रीम!"

हिमिका आइसक्रीम वाले के पास जा पहुँची और आइसक्रीम वाले की नज़र बचाकर ठेला-गाड़ी में घुस गयी। भीतर तरह-तरह की आइसक्रीमों के ढेर लगे हुए थे। अचानक अपने भाई-बिरादर – बर्फ़ के बड़े-बड़े टुकड़े – को देखकर हिमिका फूली न समायी।

"भाइयो! मुझे बड़ी खुशी है कि आप भी मेरी ही तरह न पिघलने वाले बिरादरी के हैं। क्या आप कभी नहीं पिघलेंगे? अहा, यह तो बड़ी अच्छी बात है। अब मैं अकेली नहीं हूँ।" और वह पास ही रखे एक बर्फ़ के टुकड़े की तरफ़ बढ़कर उसे गले लगाने लगी।

पर इसे हो क्या रहा है? अजीब धुआँ-सा उठ रहा था और क्षण-प्रतिक्षण दुबला होता जा रहा था। लेकिन अभी गलकर पानी नहीं बन पाया था। हिमिका ने उसे ख़ूब ध्यान से देखा और वह समझ गयी कि यह बर्फ़ उसकी तरह असली नहीं है। यह तो कारख़ाने की नक़ली बर्फ़ है, गैस से बनी है!

वह बुरी तरह निराश होकर आइसक्रीम वाली ठेला-गाड़ी से निकल भागी। बाहर सूरज से उसकी आँखें चौंधिया गयीं। सड़क पर धूल-धूसरित कारें दौड़ रही थीं। धूप से बेहाल गौरैया पानी के एक छोटे डबरे के किनारे प्यास बुझा रही थीं। अपने-अपने थैलों में ख़रीद-फ़रोख़्त का सामान सँभाले हुए राहगीरों की बेशुमार भीड़ जल्दी-जल्दी कहीं बढ़ी जा रही थी। हर आदमी व्यस्त नज़र आ रहा था। सिर्फ़ हिमिका के ही पास कोई काम न था और न उसे कहीं जाने की जल्दी ही थी। धूप से भरी, भीड़-भाड़ वाली सड़क पर वह बेचारी खुद को अकेला महसूस कर रही थी। ऐसी उलझन तो उसे तहख़ानेवाले अँधेरे सूराख में भी नहीं हुई थी। इसी क्षण उसे अपने गौरवर्णी भाई-बहनों का ख़याल आया। उसे ईर्ष्या होने लगी कि वे ज़मीन पर उतरते ही पिघले और हमेशा के लिए ग़ायब हो गये। उन्हें क्या पता कि अपने भाई-बहनों से दूर यह अकेलापन कितना खलता है? और न वे किसी के दुख का कारण ही बने। सिर्फ़ वही एक ऐसी अभागिन थी, जो झुलसती धूप में अपना दर खोजते हुए छटपटा रही थी, प्रकृति के नियम तोड़ती सभी को हैरान कर रही थी। हिमिका ने भारी मन से एक ठण्डी साँस ली और बिजली के खम्भे से टिककर खड़ी हो गयी। बेचारी, अब करे भी तो क्या? अचानक उसने ख़ूब ऊपर आकाश की ओर देखा और एक रास्ता ढूँढ़ ही निकाला। वह

बिजली के खम्भे पर चढ़ गयी और अपनी बाँहें आकाश की ओर फैला दीं :

"बादल बाबा!" वह ज़ोर से चिल्लायी, "बाबा! मैं पिघलना चाहती हूँ। पिघलकर मिटना चाहती हूँ। सुन रहे हो, बादल बाबा? मैं अकेली ऊब गयी हूँ। मुझे यहाँ से बुला लो न।"

लेकिन आसमान पर अब दूसरे बादल तैर रहे थे। उन्हें भला न पिघलनेवाली उस हिमिका के बारे में क्या पता? वे नीले आकाश में अपनी राह चले जा रहे थे। और उनके ठीक पीछे नये अजनबी बादल उड़ते आ रहे थे। वे भी बहरे ही थे। बेचारी हिमिका का अनुरोध अनसुना रह गया।

कोई भी उत्तर न पाकर हिमिका नीचे उतर आयी और फिर से सड़क पर चलने लगी। निरुद्देश्य और एकाकी जीवन से दुखी हिमिका दर-दर भटकने लगी।

अन्त में वह एक बड़े बग़ीचे में आ पहुँची और गरमी से मुरझाये हुए डेजी के पौधे के क़रीब बैठ गयी। वह डेजी की टहनी से चिपटी और फूट-फूटकर रोने लगी। आँसू बह निकले और तब उसने महसूस किया कि वह पिघल रही है। उसका स्वरूप पारदर्शी जल की एक बड़ी-सी बूँद में बदल रहा है। अब पता चला कि बादल बाबा ने उसे क्यों चेतावनी दी थी : "देखो, आज के बाद फिर कभी मत रोना।"

"धन्यवाद दोस्त!" हिमिका को पिघलते समय डेजी की आवाज़ सुनायी दी। "तुमने मुझे नया जीवन दिया है, जब मैं प्यास से मर रहा था।...."

बछेड़े का बदला

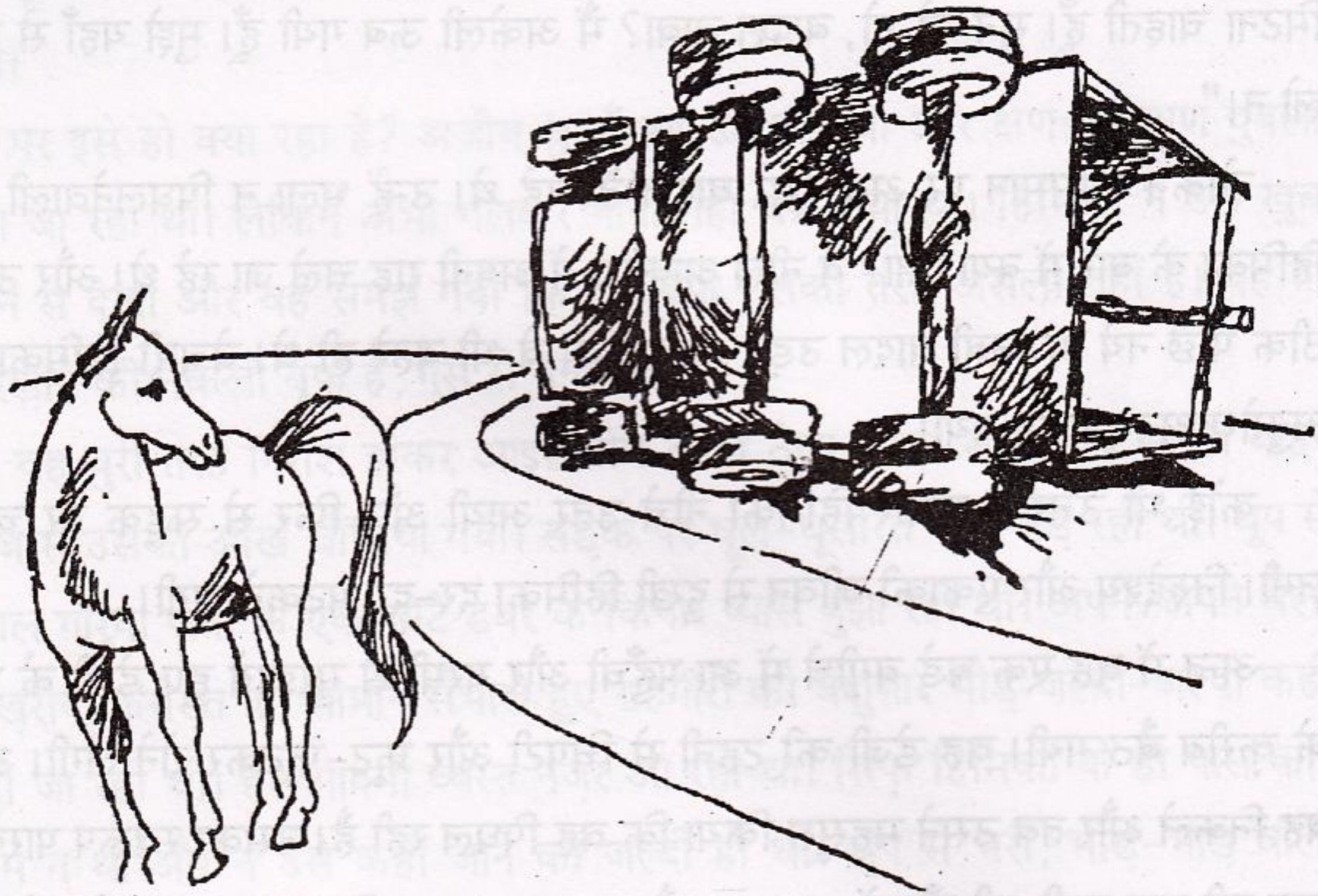

सड़क के किनारे चरागाह में एक घोड़ी चर रही थी। थोड़ी दूर पर पतली टाँगवाला एक बछेड़ा उछल-कूद कर रहा था।

सड़क को चीरती-सी ट्रकें, बसें और कारें बेतहाशा दौड़ती जा रही थीं। पीछे से धड़धड़ाती मोटरसाइकिलें हवा की चाल से उनके आगे निकल जाती थीं। सड़क के किनारे-किनारे साइकिल सवार ज़रा सावधानी से चल रहे थे।

घोड़ी उस गरजती सड़क से बेख़बर रही। उसकी अगली टाँगें बँधी हुई थीं, ताकि वह दूर न जाये। वह घास के एक गुच्छे से दूसरे तक बेढंगी चाल से कूदती, नरम-नरम घास ढूँढ़ती चर रही थी। बीच-बीच में वह परेशान करती घुड़मक्खियों को भगाने के लिए दुम हिलाती जा रही थी। लेकिन सिर्फ़ एक माह पहले जन्मा उसका बछेड़ा गरजते यातायात के तूफ़ान को सुखद आश्चर्य से देख रहा था :

"अहाहा, क्या बढ़िया चीज़ है!" उसने नारंगी रंगवाली, नीली पट्टीदार मिनीबस को देखा। "बाप रे! यह कित्ती बड़ी है!" वह आश्चर्य से मुँहबाये एक विशाल रजतवर्णी रेफ़्रीजरेटर ट्रक को निहार रहा था। "मम्मी, वो देखो! क्या मज़े की चीज़!" वह रंग-बिरंगे फीतों से सजी-सँवरी 'वोल्गा' कार को देख रहा था, जिसके बोनट पर एक गुड़िया बैठी हुई थी। इस तरह की सजी-सँवरी कारें नवब्याहता जोड़ों के लिए इस्तेमाल में लायी जाती हैं। एक बार वह अचानक ठहाका मारकर हँस पड़ा :

"मम्मी, वो देखो, कार पर तो चूजा बना है।"

लेकिन उसकी माँ मोटरगाड़ियों को देखना पसन्द न करती थी। सच तो यह है कि वह सड़क की ओर जान-बूझकर पीठ करके चरा करती थी। इस तरह वह दिखाने की कोशिश करती थी कि मोटरकारों के प्रति उसका दोस्ताना अनुभव नहीं है। आम तौर पर माँ और बेटे की रुचियों में बड़ा फ़र्क़ था। बेटे की नज़र में आकाश नीला और साफ़ था, पानी ठण्डा और मीठा और घास हरी और मज़ेदार थी। लेकिन उसकी माँ को पानी की हर बूँद में डिटरजेण्ट की गन्ध महसूस होती थी, हवा में पेट्रोल और मोबिल आयल की भभक, और चरागाह की घास में तरह-तरह के रासायनिक तत्वों का स्वाद आता। और सड़क के बारे में क्या कहना! वह उसके स्थायी शोर-शराबे और गर्द-गुबार से तंग आ चुकी थी। कारों को तो वह दुर्गन्धवाला टीन का डिब्बा कहा करती थी।...

इसलिए बछेड़ा अपनी ख़ुशियों और इन आविष्कारों के बारे में अपनी माँ की अपेक्षा एक जवान भूरी बछिया को बताना ज़्यादा पसन्द करता था। वह नटखट भूरी बछिया अपने झुण्ड से ज़रा दूर भाग आती थी, ताकि वह ज़िन्दादिल और चुस्त बछेड़े से गपशप कर सके।

वे दोनों आपस में बतियाते नयी-नयी कल्पनाएँ करते :

"क्या मज़े होते अगर उस बड़े चमकीले ट्रक में हम भी सवारी करते?" बछेड़े ने कल्पना की।

"मुझे तो डर लगता है," बछिया ने अपनी पलकें झपकाते हुए कहा। "मैं तो वहाँ से गिर ही पड़ती।"

"डरो मत! मैं तुम्हें गिरने ही न देता, कसकर पकड़ लेता," बछेड़े ने बहादुरी से अपनी छोटी अयाल को कँपकँपाते हुए कहा।

"मुझे इसमें कोई शंका नहीं," बछिया ने आँखें झपकाते हुए कहा। "अभी भागकर अपनी मम्मी से कहूँगी कि तुम कितने बहादुर हो।"

भूरी बछिया अपने झुण्ड की ओर ठठोलिया ढंग से टाँगें फटकारती हुई दौड़ गयी, उधर बछेड़ा भी अपनी माँ के पास सरपट दौड़ चला। और फिर सड़क की ओर उत्सुकता से देखने लगा।

"देखो, देखो!" अचानक वह हैरानी से चिल्लाया। "लाल ट्रक पर सीढ़ी! यह सीढ़ी किसलिए है, मम्मी?"

"मैं नहीं जानती। और न जानना ही चाहती हूँ।" घोड़ी उस अनोखे ट्रक को देखे बिना बड़बड़ायी।

"मम्मी," बछेड़ा दुबारा चिल्लाया। "देखो, मैंने तो कभी भी ऐसी चीज़ नहीं देखी है!"

ऊँची जालीदार बाड़वाली एक ट्रक धीरे-धीरे चली जा रही थी। जालीदार बाड़ के पीछे घोड़े खड़े थे। वे उदास सिर झुकाये थे। उनकी आँखों में कोई भय समाया था। उनके सिर निराशा और बेचारगी से झुके हुए थे।

"शुभ यात्रा!" वह घोड़ों की ओर देखते हुए बोला। "खूब घूमो, मौज करो! काश, मैं भी तुम्हारी तरह घूमता!"

एक बूढ़ा घोड़ा सिर उठाकर हिनहिनाया, लेकिन बछेड़े को उसकी बात न सुनायी दी।

"शायद उसने मेरी शुभकामना का उत्तर दिया होगा," उसने खुद से कहा। और वह

उछलती-कूदती भूरी बछिया को देखकर दौड़ता हुआ उसके पास चला आया।

"अरे, सुना तुमने! हमारे भाई-बिरादर तो घूमने जा रहे हैं!" वह दौड़ते हुए ज़रा ज़ोर से कह रहा था। "मैंने उन्हें शुभकामनाएँ दी थीं और खुश होकर वे भी ख़ूब हिनहिनाये थे। मुझे धन्यवाद दे रहे थे। बड़ा होकर मैं भी घूमने जाऊँगा!"

लेकिन इस बार बछिया ने उसकी बात नहीं मानी! और उसने पागुर करते हुए ज़रा तिरस्कार से उसे देखा।

"पर मेरी मम्मी कहती हैं कि ये घोड़े कसाईख़ाने जा रहे हैं, उन्हें वहाँ मार दिया जायेगा," बछिया ने ज़हर उगला।

"तो उन्हें मार दिया जायेगा?" हैरानी से बछेड़े ने कहा। क्षण-भर के लिए उसकी चमकीली आँखों में अँधेरा-सा छा गया।

"हाँ, मार दिया जायेगा! मम्मी ने यह भी कहा कि धीरे-धीरे सभी घोड़ों को वहाँ पहुँचाया जायेगा।"

"तुम झूठी हो!" बछेड़े ने गुस्से से तमतमाकर कहा।

"पर मम्मी ने कहा है कि तुम घोड़ों की बिरादरी किस काम की, तुम्हें कोई पसन्द ही नहीं करता और इसीलिए कसाईख़ाने में मार दिया जाता है। मेरी मम्मी ने तो यह भी कहा है कि घोड़ों का काम अब ट्रक और ट्रैक्टर करते हैं, जबकि हम गायें मीठा-मीठा दूध देती हैं और हमारा यह काम कोई भी नहीं कर सकता। लेकिन तुम्हारे पास देने के लिए है ही क्या? उल्टे हमारी घास व्यर्थ ही हड़प जाते हो। बताओ न, आख़िर किस काम के हो।"

सहेली की बातें सुनते ही बछेड़ा भौंचक रह गया।

"इसलिए मम्मी ने मुझे तुम्हारी ओर देखने तक से मना किया है," बछिया ने अपनी बात ख़त्म की और अपनी छोटी-छोटी सींगें ऊपर करके बड़े अहंकार से गायों के झुण्ड की ओर चल दी।

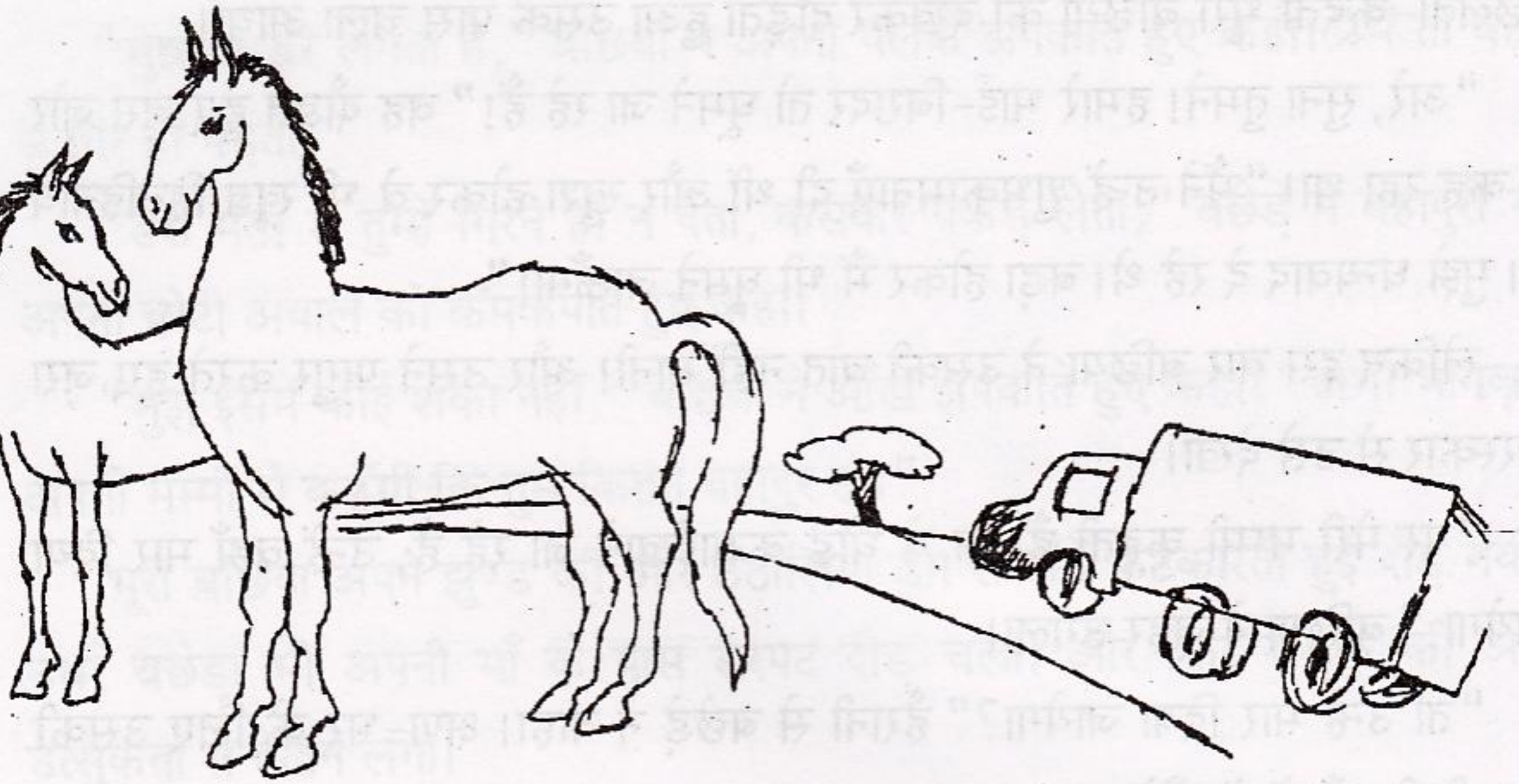

बछेड़े को गहरा सदमा पहुँचा। उसने खुद को बड़ा अपमानित महसूस किया। ज़रा सँभला तो ताने मारते हुए खूब ज़ोर से चिल्लाया :

"झूठी सिर पर लादे झूठ,
झूठ का सौदा : केक, पेस्ट्री, लेमनचूस,
देखे उसको नहीं ख़रीदे मक्खीचूस।"

लेकिन बछिया ने पीछे घूमकर नहीं देखा।

"झूठी सिर पर लादे झूठ..." बछेड़े ने फिर जल्दी-जल्दी दोहराया। लेकिन उसके शुद्ध और सहज विश्वसनीय हृदय को ठेस पहुँची थी। बछेड़ा दौड़कर अपनी माँ के पास पहुँचा। उसने अपने थूथुन को माँ की गरम छाती से सटा दिया, ताकि उसे थोड़ी सान्त्वना मिल सके।

"मम्मी, मम्मी! क्या घोड़े किसी काम के नहीं होते? क्या ट्रक और ट्रैक्टर हमारा ही काम करते हैं?" उसने धीरे से पूछा।

उसे उम्मीद थी कि माँ हँसकर कहेगी कि यह सब सफ़ेद झूठ है!

लेकिन घोड़ी ने मायूसी से सिर हिलाकर कहा :

"हाँ, बेटे! यह सच है।"

"तो क्या सचमुच उन घोड़ों को कसाईख़ाने ले जा रहे थे?"

"तुम्हें किसने बताया?" घोड़ी ने सतर्क होकर पूछा।

"उसी भूरीवाली बछिया ने। उसने तो यह भी कहा है कि मैं भी किसी काम का नहीं हूँ और वह अब मेरे साथ नहीं खेलेगी," बछेड़ा सुबक-सुबककर रोने लगा।

घोड़ी ने लम्बी टाँगों वाले अपने बेटे को प्यार और करुणा से देखा। जीवन का यह कटु सत्य इस तरह अचानक उघड़ गया। नन्हे सुकुमार हृदय के लिए यह भारी बोझ था।

शाम को अस्तबल लौटने पर माँ ने घोड़ों के शानदार अतीत का सारा क़िस्सा बेटे से कह सुनाया। उसने ऐसी अनोखी और आश्चर्ययुक्त कहानियाँ कह सुनायीं, जिनके कथा-नायक उसके पराक्रमी पूर्वज ही थे।

माँ की बात से बछेड़े का मन कुछ हल्का हुआ, वह अगली सुबह सोकर उठा तो हमेशा की तरह प्रसन्न था। वह रेवड़ की ओर दौड़ा और चक्कर लगाता हुआ दुलकी चाल से नाचने लगा। इस तरह वह अहंकारी बछिया के आने तक नाचता रहा। और उसे देखते ही बौछार-सी करते हुए बोला :

"लो, अब तुम भी सुन लो! मेरी मम्मी कहती हैं कि हम घोड़ों का इतिहास बड़ा शानदार था। वैसा अतीत न किसी गाय का रहा है, न कभी होगा। मेरी मम्मी यह भी कहती हैं कि पुराने ज़माने में घोड़े बड़ी-बड़ी लड़ाइयों में हिस्सा लेते थे, बहादुरी दिखाने में बहुत से घोड़े शहीद भी हो गये। घोड़ों का नाम तो इतिहास में अमर है। हमारे पूर्वज हवा की तरह उड़ते हुए विजय की ख़बरें लाते थे। मम्मी ने यह भी बताया है कि राजघरानों में घोड़े सबसे क़ीमती उपहार माने जाते थे, वे किसानों के मित्र और रोजी-रोटी का साधन होते थे।

"मम्मी ने तो यह भी बताया है कि हमारी गर्दनों में सोने की घण्टियाँ बँधी होती थीं

और हमारी साजें क़ीमती चमड़ों की बनती थीं, जिन पर सोने की फूल-पत्तियाँ कढ़ी होती थीं। सफ़र के दौरान हम घोड़े मनुष्यों की रक्षा करते थे। ख़ासकर जब हिंसक भेड़ियों का झुण्ड रास्ते में घोड़ागाड़ियों पर हमले करता था, तब हमारी फुर्तीली टाँगें सरपट दौड़कर भेड़ियों से दूर निकल जाती थीं। मेरी मम्मी ने एक और मज़ेदार बात बतायी है। वह कहती हैं कि रेस के चुस्त, फुर्तीले घोड़े आज भी कमाल दिखाते हैं, सारी दुनिया उनकी जीत पर तालियाँ बजाती हैं। और हाँ, यह भी सुन लो : मम्मी का कहना है कि तुम्हारी गायें सुस्त और बड़े पेटवाली होती हैं, जो रँभाने और पागुर करने के अलावा कुछ कर ही नहीं सकतीं। इतना ही नहीं, लोग तुम्हारे हिस्से का दूध तक दुह लेते हैं और तुम टापती रह जाती हो। तुम्हारा पुराना इतिहास तो बड़ा ऐसा-वैसा रहा है। कोई उपयोगी बात नज़र ही नहीं आती। वही अब भी है।"

क्षण-भर के लिए भूरी बछिया हक्का-बक्का रह गयी। यह सोच भी न पायी कि

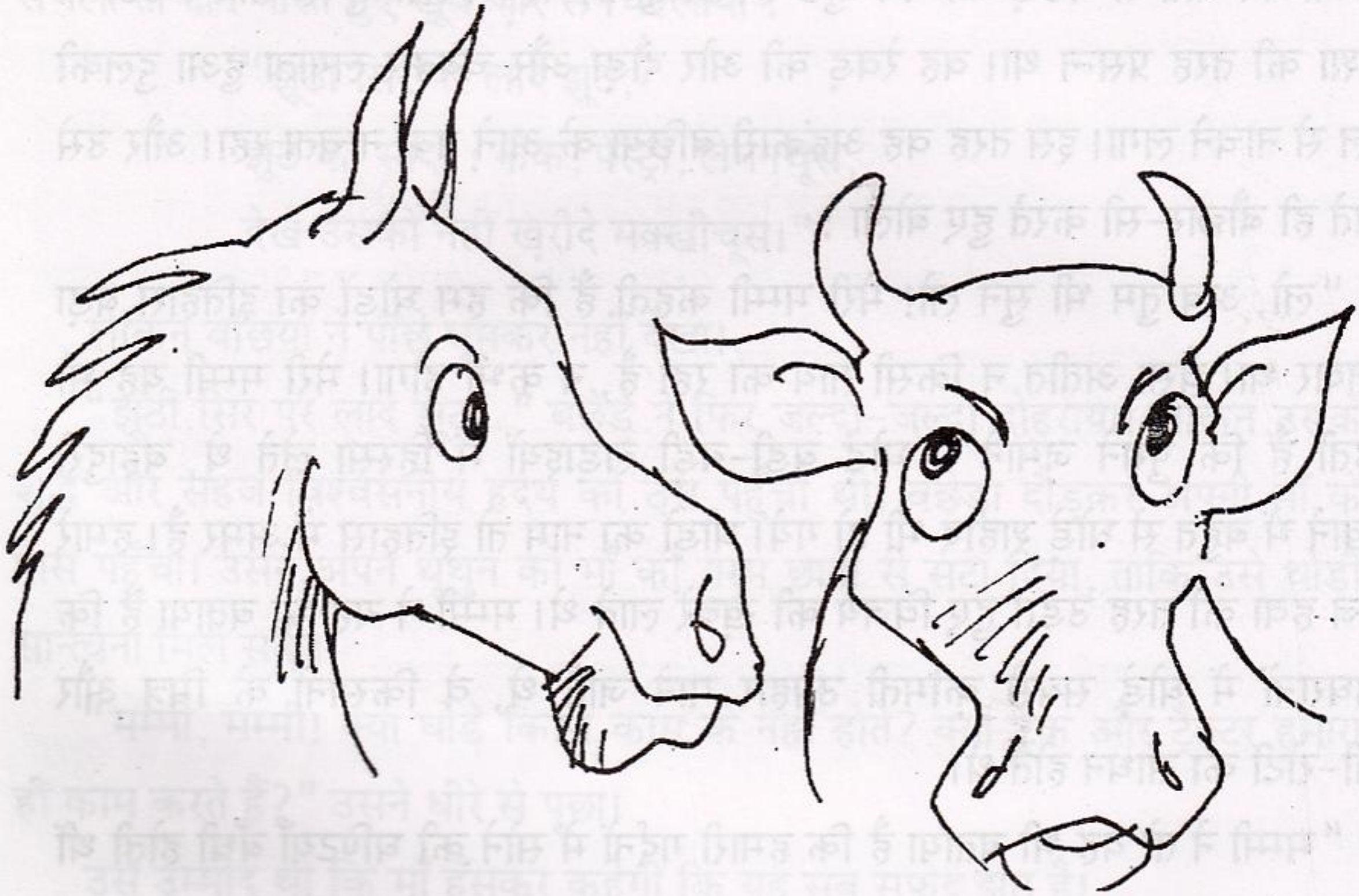

कहा क्या जाये। ज़रा सँभली तो ज़ोर से चिल्लायी :

"ठहरो ज़रा! अभी मम्मी से कहती हूँ कि तुम कैसी उलटी-पुलटी बातें करते हो : गायें सुस्त और बड़े पेटवाली होती हैं, वे रँभाने और पागुर करने के अलावा कुछ कर ही नहीं सकतीं। मम्मी बैल बाबा से कह देंगी और वह अपनी सींगों से तुम्हारी ऐसी ख़बर लेंगे, ऐसी ख़बर लेंगे कि, बच्चू, याद रखोगे!"

"चुगलखोर कहीं की!" बछेड़े ने तिरस्कार करते हुए कहा।

भूरी बछिया ने ज़रा अक्ल दौड़ायी और बोली :

"बहुत ख़ूब! अपने इतिहास की डींग मत मारो! बात वही है। तुम्हारा काम अब मशीनें करती हैं, जबकि हमारी जगह मशीनें नहीं ले सकतीं। और घोड़े अगर लड़ाई के मैदान में इतने बड़े सूरमा होते थे, तो फिर तुम ट्रकों और ट्रैक्टरों से मुँह क्यों छिपाते हो, क्या तुम उनसे डरते हो! क्या उन्हें ललकार नहीं सकते!"

इस बार बछेड़ा कुछ न कह पाया। और खीजा हुआ ज़मीन पर सुम प्रहार करने लगा, दुम फटकारने लगा।

बछिया अपने झुण्ड में लौट आयी और माँ-गाय की बगल में सटकर खड़ी हो गयी। वह तिरछी नज़र से बछेड़े को देख रही थी।

बछेड़ा भी घूमा और अपनी माँ की ओर दुलकी चाल से कुछ सोचते हुए चल पड़ा। भूरी बछिया की व्यंग्यभरी बातें उसे बर्छी-सी चुभ रही थीं। वह जी भरकर झगड़ सकता था, नाराज़ हो सकता था – लेकिन उसकी बात में आंशिक सच्चाई तो थी ही! आख़िर घोड़ों ने अब तक इन मशीनों का विरोध क्यों नहीं किया! वे एक बार भी उनके ख़िलाफ़ आवाज़ न उठा सके! यह तो अच्छा ही था कि उसकी माँ दौड़ती कारों और ट्रकों को देखना तक पसन्द न करती थी, मुँह घुमाकर चरा करती थी – पर मोटरों को इसकी क्या परवाह?

बछेड़े का दिल तड़पने लगा : उसे लगा कि घोड़ों की बिरादरी और उसकी प्रतिष्ठा

के लिए वही एकमात्र ज़िम्मेदार है। उसने इस बार बछिया की व्यंग्यभरी बातें माँ से भी नहीं बतलायीं। उसे अब अहसास हो चुका था कि ऐसी भी बातें हैं, जिनका फ़ैसला हरेक को खुद ही करना चाहिए। वह सड़क पर उफनते यातायात को अब दूसरी ही नज़र से देखने लगा। वह गहरे सोच में डूबा रहा। उसकी नन्ही-सी अक्ल में एक विचार कौंधा। और झट से वह पक्की सड़क की ओर सरपट दौड़ पड़ा।

"कहाँ जा रहे हो?" माँ ने चेतावनी देते हुए कहा। "वहाँ मत जाओ, ख़तरा है! चलो, वापस लौटो।"

लेकिन बछेड़े ने जैसे सुना ही नहीं। उसने छलाँग लगाकर खड्ड को पार किया और सड़क पर पहुँच गया। वह सड़क के किनारे खड़ा होकर दौड़ती-भागती गाड़ियों को देखने लगा, मानो किसी का इन्तज़ार कर रहा हो। वह देर तक प्रतीक्षा करता रहा। तब तक उसे थोड़ी दूर पर मोटरों की रानी – रजतवर्णी रेफ़्रीजरेटर ट्रक – दिखायी दी। वह ख़ूब बड़ी थी! जब ट्रक बिल्कुल क़रीब आ गयी, बछेड़ा कूदकर सड़क पर आया और उस ट्रक के सामने रास्ता रोककर खड़ा हो गया! उसकी पतली टाँगें फैली हुई थीं और सीना चुनौतियाँ देता, तना हुआ था।

ड्राइवर ने देखा कि एक बछेड़ा न सिर्फ़ ट्रक के सामने खड़ा है बल्कि उस पर हमला करने ही वाला है। ड्राइवर घबरा गया। उसने ज़ोर से ब्रेक लगाया और स्टीयरिंग को तेज़ी से घुमा दिया। लेकिन ट्रक फिसली, खड्ड में जा घुसी और ज़ोर से गरजती हुई पलट गयी।

उसके बड़े-बड़े पहिये थोड़ी देर तक घूमते रहे और जब वे थमे तो सड़क पर एक मनहूस सन्नाटा छा गया। थोड़ी दूर पर घोड़ी जड़वत खड़ी थी। गायों के झुण्ड ने घास चरना छोड़ दिया। खुद बैल भी आँखें फाड़कर उलटे हुए ट्रक को देखने लगा, जो प्रचण्ड चक्रवात द्वारा सड़क पर फेंके गये घास-फूस की तरह लग रहा था।

बछेड़ा वहीं खड़ा रहा, उसकी चारों टाँगें ज़रा दूर-दूर फैली हुई थीं। लेकिन अब वे

घोड़े की दुम की तरह काँप रही थी। उसने हैरानी से आँखें झपकायीं। उसे तो विश्वास ही न था कि इतना बड़ा हंगामा उसने ही खड़ा किया है। वह अपनी जगह पर देर तक अड़ा रहता, अगर दूसरी मोटरकारें उलटे हुए ट्रक के पास रुकने न लगतीं।

अचानक उसे लगा कि उसका हट जाना ही बेहतर है। वह सरपट चरागाह की ओर दौड़ा और अपनी माँ से चिपककर खड़ा हो गया।

उन्होंने देखा कि लोगों ने बड़ी मुश्किल से ड्राइवर का केबिन खोला और ड्राइवर घिसटता हुआ बाहर निकला। बाप रे! वह गुस्से से तमतमाया हुआ था। यहाँ तक कि इस चरागाह में भी उसकी गुस्सैल आवाज़ गूँज रही थी। वह सभी घोड़ों को कोस रहा था – घोड़ों, घोड़ियों और उनके बछेड़ों तक को!

वह चौतरफ़ा नज़र दौड़ाकर उस शोख अपराधी को देखने लगा, उसे देखते ही उसने एक मोटा डण्डा उठाया और चरागाह की ओर झपट पड़ा।

"भागो! भागो! जल्दी!" घोड़ी ने बेटे से कहा और उसे अपने थूथुन से ठेल दिया। बछेड़ा जान बचाकर भागा।

ड्राइवर थोड़ी देर तक उसका पीछा करता रहा, पर हवा से बातें करना उसके बूते के बाहर था। वह गालियाँ देते लौट पड़ा। जल्द ही वह एक कार में बैठकर पास वाले क़स्बे की ओर चल दिया, ताकि तात्कालिक सहायता के लिए टेलीफ़ोन किया जा सके।

सिर से ख़तरा टल चुका था, बछेड़ा दौड़कर गायवाले झुण्ड की ओर पहुँचा। गायें और बैल घास चरते हुए इस सड़क दुर्घटना पर बहस कर रहे थे। लेकिन भूरी बछिया बेचैन थी, बछेड़े की प्रतीक्षा में थी। उसे देखते ही वह तुरन्त दौड़ पड़ी।

"मम्मी कहती हैं..."

बछेड़े ने उसकी बातें मानो अनसुनी कर दी। वह दण्डित होने से बच गया था और उसकी कँपकँपाती टाँगें अब स्थिर हो चुकी थीं। उसे आज खुद पर नाज था।

"मम्मी कहती हैं," भूरी बछिया ने कहा, "तुमने यह मूर्खता की है। तुम मर जाते या ड्राइवर मर जाता तो..." थोड़ी देर ख़ामोश रहने के बाद उसने आगे कहा : "लेकिन मेरे ख़याल से तो तुम दुनिया के सबसे पराक्रमी बछेड़े हो।"

बछेड़ा ख़ामोश रहा। वह तो दूर आँखें गड़ाये देख रहा था – अतीत का एक भव्य चित्र! युद्ध-भूमि से सरपट दौड़ता हुआ एक चुस्त घोड़ा अपनी पीठ पर एक ज़ख़्मी योद्धा को लादे हुए है।... उसने देखा कि तीन घोड़ों की बग्घी चली आ रही है, भेड़ियों का झुण्ड उसका पीछा कर रहा है। उसने यह भी देखा कि रात का प्रहर है, घोड़े चरागाह में चर रहे हैं – अगले दिन के लिए, कठोर श्रम के लिए तैयार हो रहे हैं। उसने घुड़दौड़ का मैदान देखा, फुर्तीले घोड़ों की घुड़दौड़ देखी। और यह भी देखा कि एक खेतिहर घोड़ा एक भारी हल को खींच रहा है। उसे लगा कि वह घोड़ों के गौरवशाली अतीत को अपनी आँखों से देख रहा है।...

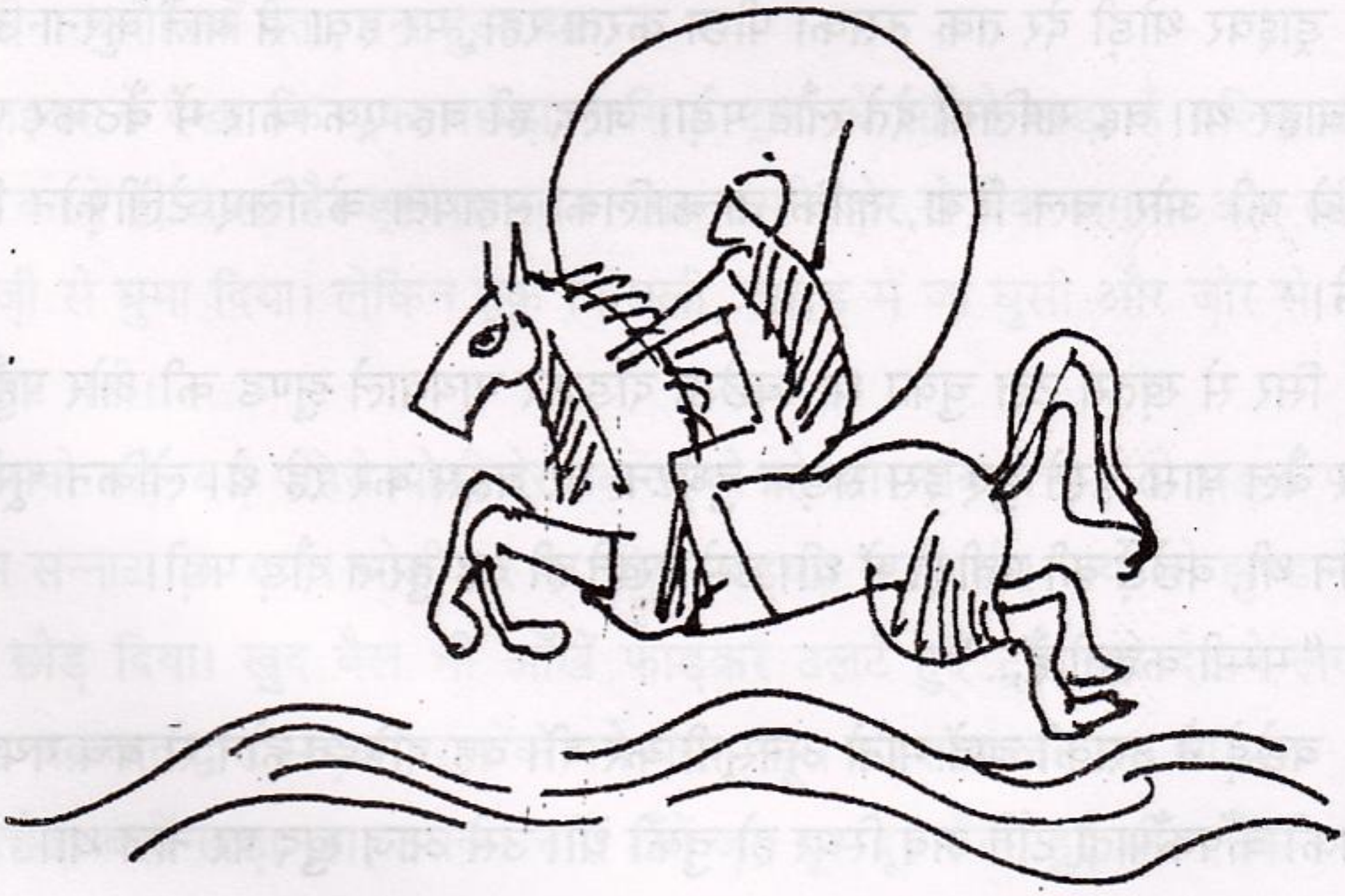

अनुराग ट्रस्ट
लखनऊ